R.N.I. No. 2321/57
फरवरी 2020

ओ३म्

रजि. सं. MTR नं. 004/2019-21
अंक 1

तपोभूमि

मासिक

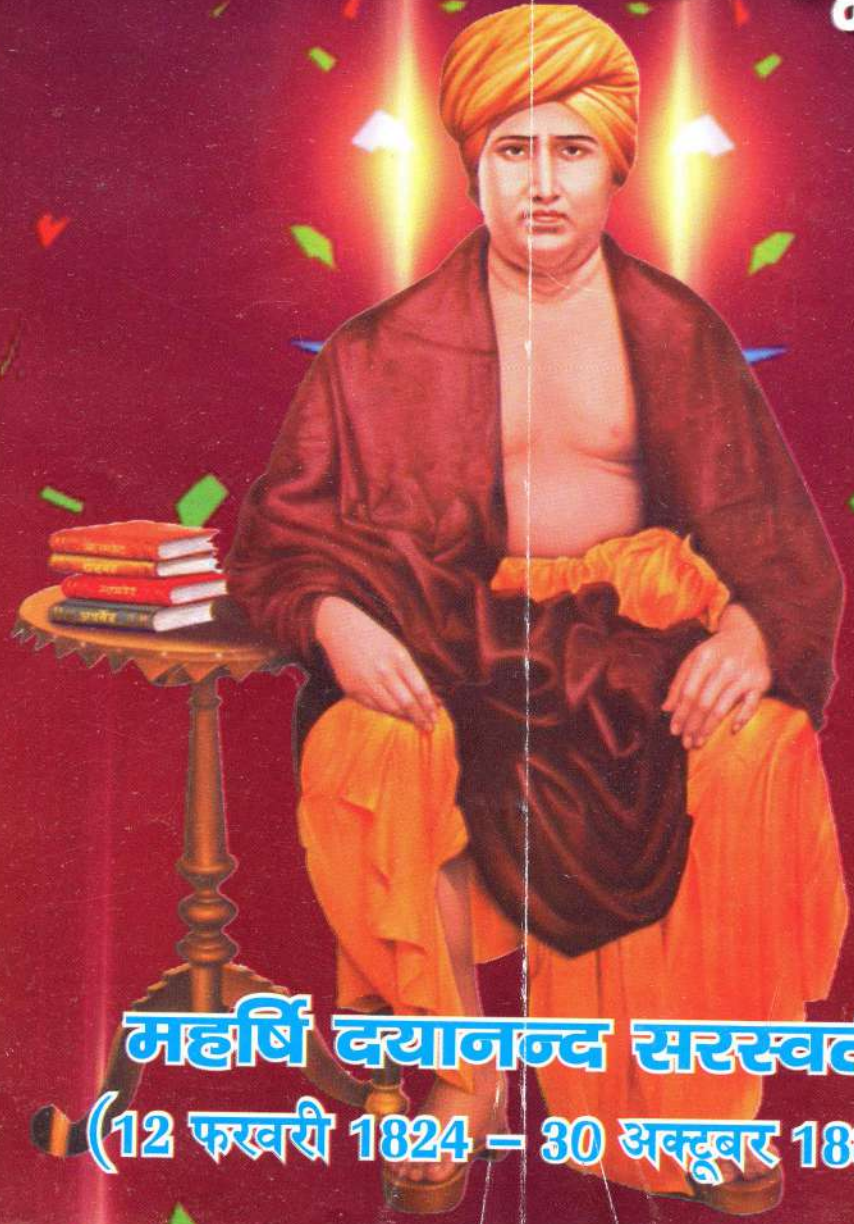

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(12 फरवरी 1824 – 30 अक्टूबर 1883)

आचार्य प्रेमभिक्षु जी की 25 वीं पुण्यतिथि
दिनांक 25 अप्रेल 2020 को वेदमन्दिर मथुरा में आयोज्य

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान्, प्रखर वक्ता, लोकप्रिय लेखक, कुशल सम्पादक, भावुक कवि, वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ पंडित, वेदमन्दिर मथुरा के संस्थापक, तपोभूमि मासिक के आद्य सम्पादक, वैदिक परिवार निर्माण आन्दोलन के सूत्रधार, शतशः परिवारों की दैनिन्दिन चर्या में पंचमहायज्ञों को समाविष्ट कराने वाले, महर्षि देव दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में जीवन खपा देने वाले, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी (स्मृतिशेष) आचार्य प्रेमभिक्षु जी के भौतिक शरीर को विदा हुए 25 वर्ष होने जा रहे हैं, यह ठीक है कि वे हमारे मध्य नहीं रहे परन्तु इस सारे कालखंड में उनका सौम्य व्यक्तित्व और उनकी प्रेरणादयी शिक्षाएं कभी हमसे ओझल नहीं हुईं, आज जब आर्यसमाज में सर्वत्र सैद्धान्तिक स्खलन, कथनी और करनी में अन्तर दिखाई देता है तो आचार्य जी की कार्यशैली की प्रभावोत्पादकता तथा प्रासंगिकता का अनुभव होता है।

अतः आचार्य प्रेमभिक्षु जी जैसे महामना की 25 वीं पुण्यतिथि को 'प्रेरणादिवस' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया है। वेदमन्दिर, मथुरा (उत्तर प्रदेश) में 25 अप्रेल 2020 को प्रातः 8 बजे से देवयज्ञ के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ होगा। कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा आपके समक्ष शीघ्र प्रस्तुत की जायेगी।

आर्यसमाज की दृष्टि से मथुरा जनपद का तो कायाकल्प ही आचार्य जी के पुरुषार्थ से हुआ था परन्तु उनका प्रभाव क्षेत्र तो भारतवर्ष की सीमाओं को भी लांघकर विदेशों तक स्थापित था। अतः दूर- दूर से आचार्य जी के प्रशंसक उन्हें अपनी श्रद्धांजलि देने को समुत्सुक होंगे इसमें सन्देह नहीं।

अपने आचार्य के पुण्य संस्मरणों के आलोकपुंज के तले, आयें पुनः उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को साक्षी मान अपने व्रतों का स्मरण करते हुए, आर्यसमाज की उन्नति में सर्वस्व न्यौछावर करने हेतु सन्नद्ध हो जायें ताकि आचार्य जी के ही शब्दों में 'देव दयानन्द' के

-(शेष पृष्ठ संख्या 35 पर)

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–66 संवत्सर 2076 फरवरी 2020 अंक 1

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादकः
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

फरवरी 2020

सृष्टि संवत्
1960853120

दयानन्दाब्दः 196

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा (उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाषः
0565–2406431
मोबा0 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4–5
उद्देश्य और कार्य–प्रणाली में मौलिकता	–पं0 माधवराव	6–8
स्वास्थ्य चर्चा	–	9
ईश्वर का वैदिक स्वरूप और गो0 तुलसीदास	–रामस्वरूप आर्य	10–11
पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा	–	12–15
व्रत पालक बनो	–अध्यापक किशोरीलाल गुप्त	15–16
कभी कुछ और कभी कुछ	–कवि गोपालशरणसिंह	17
महर्षि जन्म से आज तक की–	–खुशहालचन्द्र आर्य	18–21
वीर्य रक्षण करने की युक्ति	–श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	22
शान्ति सामा शान्तिरेधि	–बहिन शान्ति नागर	23
कन्याएँ कितनी महिमामयी ?	–प्रियवीर हेमाइना	24
धन्य थे वे ऋषि	–मदनमोहन एडवोकेट	25
बुढ़ापा आपके मन का भ्रम मात्र है	–	26
आगई शिवरात्रि	–	27
पाखण्ड–खंडन	–महाकवि नाथूराम 'शंकर' शर्मा	28
आर्य जीवन	–पं0 राजाराम प्रोफेसर	29–32
ऋषि बोधोत्सव		34

❀❀❀

वार्षिक शुल्क 150/– पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

वेदवाणी

लेखकः डॉ० रामनाथ वेदालंकार

प्राणों से बल और सुमति की प्राप्ति

पयस्वतीः कृणुशाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षरसः।
ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिंचथा मधु॥

–अथर्व0 6। 22। 2

शब्दार्थः–

हे (रुक्मवक्षसः मरुतः) वक्षः स्थल पर स्वर्णालंकार धारण किये हुए प्राणो! तुम (यद् एजथ) जब गति करते हो, तब (अपः) नदियों को तथा (ओषधीः) ओषधियों को (पयस्वतीः) रसवती और (शिवाः) शिव (कृणुथ) कर देते हो। हे (नरः मरुतः) नेता प्राणो! (यत्र) जहाँ तुम (मधु सिंचथ) मधु सींचते हो (तत्र) वहाँ (ऊर्जं च सुमतिं च) बल और सुमति को (पिन्वत) सींचो।

भावार्थः–

'मरुतः' का एक अर्थ प्राण होता है। प्राणों के दो रूप हैं–एक प्राकृतिक प्राण, जिनसे ओषधि–वनस्पतियाँ हरी–भरी और सजीव प्रतीत होती है, दूसरे आन्तरिक प्राण, जिनसे शरीर की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ प्रफुल्ल, क्रियाशील एवं विजयशील रहती हैं। मन्त्र के पूर्वार्ध में 'मरुतः' से प्राकृतिक प्राण गृहीत होते हैं। वहाँ उनका विशेषण 'रुक्मवक्षसः' दिया गया है। 'रुक्म' स्वर्णालंकार को कहते हैं, मानो प्राणों ने सर्वश्रेष्ठ होने के पुरस्कार का हिरण्यलंकार छाती पर लगाया हुआ है। ये जब प्रकृति में गति करते हैं, तब ओषधियों को रसवती और शिव कर देते हैं। ओषधियाँ यहाँ उपलक्षण हैं। प्राणों से प्रकृति की प्रत्येक वस्तु भूमि, लताएँ, पुष्प, फल, कन्दमूल, नदियाँ, समुद्र, पर्जन्य आदि सक्रिय एवं शोभायमान हो उठती हैं।

मन्त्र के उत्तरार्ध में शरीरस्थ प्राणों को 'मरुतः' नाम से कहा गया है कि जिस शरीर में तुम मधु सिक्त करते हो, उस शरीर में ऊर्क् और सुमति भी सिक्त करो। प्राणों ने शरीर के सब अंगों एवं अवयवों में मधु सिक्त करके उन्हें परस्पर समन्वय में बाँध रखा है, अन्यथा मधु के अभाव में वे तितर–बितर हो जाते। परन्तु केवल अंगों या अवयवों में मधु–सेचन द्वारा परस्पर समन्वय लाना ही पर्याप्त नहीं है, शरीर की पूर्णता इस बात में है कि उसके अन्दर बल और सुमति भी आये। बल की महत्ता बताते हुए छान्दोग्योपनिषद् में सनत्कुमार कहते हैं–'बल से ही पृथिवी स्थित है, बल से अन्तरिक्ष, बल से द्युलोक,

बल से पर्वत, बल से देव और मनुष्य, बल से पशु, पक्षी, बल से पर्वत, बल से देव और मनुष्य, बल से पशु, पक्षी, तृण-वनस्पति, हिंस्र जन्तु, कीट-पतंग से चींटी तक सब बल से स्थित हैं। बल से सारा लोक स्थित है। अतः बल को उपासो। किन्त सुमति के बिना बल अकिंचित्कर है, सुमति नहीं होगी, तो बल गलत दिशा में चलेगा, अतः प्राण से सुमति की याचना भी की गई है। आइये, प्राणों से अपने अन्दर मधु सींचे, शारीरिक और आत्मिक बल सींचें, सुमति सींचे तथा शरीर , मन, बुद्धि, आत्मा को सही दिशा में चलाकर अमृत प्राप्त करें। ❁

तपोभूमि मासिक के पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका प्रतिमाह आप तक पहुँच रही है। हमारा हर सम्भव प्रयास यही रहता है कि पत्रिका में उच्चकोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित करके आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये यह पत्रिका जन-जन तक पहुँचे। ताकि वे इसका पूर्णतया लाभ प्राप्त कर सकें। लेकिन यह तभी सम्भव है जब आप सबका सहयोग हमें मिले।

'तपोभूमि' मासिक के पाठको से निवेदन है कि जिन्होंने अपना वार्षिक शुल्क चालू वर्ष या पिछले वर्ष का शुल्क अभी तक नहीं भेजा है। वे शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भिजवाने की व्यवस्था करें। वार्षिक शुल्क 150/- एक सौ पचास रुपये तथा पन्द्रह वर्ष हेतु 1500/- एक हजार पाँच सौ रुपये भेजकर पत्रिका पढ़ने का लाभ उठायें।

हम आपको प्रति माह पत्रिका पहुँचाते रहेंगे। आपके सहयोग व हमारे परिश्रम से निरन्तरता बनी रहेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार जन-जन तक भी होता रहेगा।

हमें अपने ग्राहक महानुभावों से यही अपेक्षा है कि बिना विघ्न कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। साथ ही यह भी प्रार्थना है कि आप अपने परिश्रम से नवीन ग्राहक बनवाने का सौभाग्य प्राप्त करें।

-धनराशि भेजने हेतु बैंक का नाम व पता एवं खाता संख्या-

इण्डियन ओवरसीज बैंक

शाखा युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, जयसिंहपुरा, मथुरा

I F S C Code- IOBA 0001441

'सत्य प्रकाशन' खाता संख्या- 144101000002341

दान हेतु- 'श्री विरजानन्द ट्रस्ट' खाता संख्या- 144101000000351

सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार करना राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

छोटी-छोटी अर्थात् तुच्छ बातों पर ध्यान देना

लेखकः पं० माधवराव

छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना भी सफलता के लिए एक आवश्यक गुण माना गया है। कुछ दिन पहले एक अतुल द्रव्यवान् व्यापारी से पूछा गया था कि उसने अपनी सारी सम्पत्ति किस तरह कमाई थी। क्या उसे केवल अच्छा संयोग मिल जाया करता था? नहीं, क्योंकि उसके अन्य साथियों को भी उत्तम से उत्तम भाग्यशाली अवसर मिला करते थे। तो क्या वह केवल अपने परिश्रम के द्वारा सफल हुआ था? हाँ, उसका परिश्रम सफलता के कुछ अंशों में सहायक अवश्य हुआ था, परन्तु पूरा-पूरा नहीं, क्योंकि और भी बहुत से ऐसे अन्य व्यापारी थे जो उससे भी अधिक परिश्रम किया करते थे। उसकी सफलता का सबसे बड़ा कारण यही था कि वह अपने व्यापार सम्बन्धी छोटी-छोटी बातों की लापरवाही कभी न करता था। उसका कथन है कि बहुत से व्यापारी सदा अपने को थोड़ा बहुत विचार करने और तरकीबें सोचने से ही सन्तुष्ट कर लेते हैं और छोटे-छोटे आवश्यक कार्यों की पूर्ति का भार अपने असावधान नौकरों पर छोड़ देते हैं, इसलिए वे अकृतकार्य हुआ करते हैं।

उपर्युक्त बातों का अनुभव हमें अपने दैनिक जीवन के बहुत से कामों में होता है। किसी विशेष योग्यता-प्राप्त मनुष्य की असफलता का कारण तो केवल यही हुआ करता है कि वह छोटी बातों पर बहुधा घृणा करता है। उसका आत्मा उसे महान् कार्यों के करने में प्रेरित करता और विश्वास दिलाता है। किये गये काम का स्मरण करके उस का योग्य हृदय उत्साह से भर जाता है, परन्तु वह मनुष्य विचारों को कार्यरूप में परिणत करते समय उस काम के छोटे-छोटे, तुच्छ, रूखे और शुष्क, किन्तु अत्यन्त आवश्यक, अंगों को पूरा करने में उकता जाता है और उन्हें कदाचित् अपनी मान-हानि समझकर छोड़ देता है। इस अवस्था को देखकर हम कह सकते हैं कि यह संसार अनेक छिपे और लापरवाह विद्वान् तथा योग्य मनुष्यों से भरा पड़ा है। केवल उनें वह गुण नहीं है जो संसार में ख्याति-लाभ करने वाले व्यक्तियों में चाहिए। किसी छोटे से अवगुण अथवा दोष के कारण उनकी समस्त योग्यताओं और विशेषताओं का समूह बेकाम और सन्निपात-ग्रस्त हो जाता है, वे उस नर्तक के समान होते हैं जो अपनी कला में पूर्णतया निपुण होकर भी थोड़ा सा लंगड़ा था।

ऐसे ही मनुष्य सदा अपने भाग्य की शिकायत किया करते हैं। परन्तु वस्तुस्थिति की ओर देखने से मालूम होता है कि वे अपने जीवन के छोटे-छोटे कामों को पूरा करने में असावधान होकर असफल हो जाते हैं, इसलिए संसार फिर उन्हें कभी कोई बड़ा काम नहीं सौंपता। सफलता के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि पहले पहल छोटी बातों पर ध्यान ही न दिया जाय बल्कि उन पर प्रेम भी उत्पन्न किया जाय। इस नियम का तिरस्कार करके विशेष योग्यता, उच्च विचार और उचित उत्साह से भी काम पूरा

नहीं हो सकता।

बस, यहीं पर कार्यकर्ता मनुष्य में और ऊँघते-ऊँघते विचार के पुल बनाने वाले मनुष्य में भेद पाया जाता है। साहित्य-क्षेत्र और अनेक ललित कलाओं में भी सफलता तब तक नहीं मिल सकती जब तक छोटी बातों और विभागों पर वर्षों तक सतत् परिश्रम-पूर्वक ध्यान न दिया जाय। यदि कोई वकील अपने मुकदमे की किसी छोटी सी बात को अनुपयोगी समझ कर उचित पूछताछ न करे, यदि कोई दस्तावेज लिखने वाला एक उपयोगी शर्त को तुच्छ समझ कर न लिखे, यदि कोई घर बनाने वाला दीवाल अथवा नींव की थोड़ी सी कमजोरी की परवाह न करे, यदि कोई लेखक अपने लेख को दुबारा न देखकर उसमें व्याकरण-सम्बन्धी तथा दृष्टि की कुछ और भूलें पड़ी रहने दे, अथवा कोई सेनापति अपने सिपाहियों में से दस-पचास के शस्त्रों को टूटा फूटा ही रहने दे, तो यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि कितनी अधिक और नाशकारी हानि होने की सम्भावना है।

दुनिया में प्रसिद्धि प्राप्त पुरुषों का नाम केवल उसकी सार्वत्रिक योग्यता और परिश्रम-शक्ति के कारण ही अमर न होकर छोटी बातों पर उचित ध्यान देने से ही हुआ है। उन्हें अपने काम के बारीक अंगों का ध्यान खाते-पीते, उठते-बैठते, आते-जाते, सभी समय रहा करता था, यहाँ तक कि उन्हें उनका स्वप्न भी हो जाया करता था। वारन हेस्टिंग्स के भाई डयूक आफ बेलिंगटन के उसके भारतवर्ष में रहने के समय की स्वरीते (Despatches) जब पहले पहल प्रकाशित हुए तब उनमें उसकी भारत-सम्बन्धी चढ़ाइयों का विवरण पढ़कर उसके एक मित्र ने कहा 'क्यों भाई वेलिंगटन, मैं समझता हूँ कि भारतवर्ष में तुम्हारा मुख्य काम केवल चावल और बैल एकत्रित करने का था।'' वेलिंगटन ने उत्तर में कहा कि 'अवश्य, मेरा काम वही था, क्योंकि जब मेरे पास चावल और बैल मौजूद रहते थे तब आदमी (सिपाही) भी रहते थे, और जब मेरे साथ आदमी रहते थे तब मुझे यह अच्छी तरह से मालूम था कि दुश्मन किस तरह से जीता जा सकता है।''

हम लोगों का दृष्टिकोण कुछ विचित्र-सा है। हम रवीन्द्रनाथ का महाकवि होना तब तक स्वीकार नहीं करते जब तक वे विलायत में नोबुल प्राइज पाकर न आ जायँ। दादाभाई नौरोजी की योग्यता को हम तब तक नहीं मानते जब तक किसी विलायती समाचार-पत्र में उनकी प्रशंसा-पूर्ण जीवनी प्रकाशित न हो। गोखले को हम उस समय तक अर्थशास्त्र-पण्डित और धुरन्धर राजनीति-कुशल नहीं कहते जब तक कोई विदेशी अफसर उनकी पीठ न ठोके। इसी तरह हम अपने देश के किसी व्यापारी को बुद्धिमान्, कार्य-कुशल और योग्य नहीं कहते जब तक कि वह अपने खजाने में हमें दस करोड़ रुपये न दिखा दे। पर क्या लक्ष्य-सिद्धि ही सफलता की एक मात्र कसौटी है? क्या कार्यसाधन-प्रणाली में और उसके अन्तरंग अंग-प्रत्यंगों में हमें सफलता का बीज नहीं दीख सकता? यदि दीख सकता है तो हमें उचित है कि लक्ष्य के नाम पर माला फेरते न बैठकर हम उसके साधन के विभागों-छोटे से छोटे और रूखे हिस्सों-पर आवश्यक ध्यान दें और प्रत्येक अवसर से लाभ उठावें।

शान्ति पूर्ण कामों और व्यवसायों में जिस तरह छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है उसी तरह युद्ध सम्बन्धी कार्यों में भी है। जिस महान् विश्वविजयी सेनापति का नाम किसी देश में बड़े गौरव और अभिमान के साथ लिया जाता है वह एक छलांग कूद कर ही बड़ा भारी सेनापति नहीं बन जाता, केवल उसके अच्छे-अच्छे, मीठे और उदात्त विचार ही उसके यश के कारण नहीं हो जाते। उसे सेनासंचालन के-भोजन, वस्त्र, जूते, शस्त्र और सिपाहियों की आरोग्यता आदि के-सम्बन्ध की छोटी-छोटी अनेक बातों पर रात दिन ध्यान देना पड़ता है। एक लाख तुच्छ बातों पर ध्यान देने से और एक लाख आज्ञायें देकर अनेक बार भयंकर निराशाओं का सामना करने पर, कहीं उसे एक विजय मिलती है। उसे अपने देशभाइयों से यह सुनकर कितनी स्वर्गीय प्रसन्नता होती होगी कि 'देखो, हमारा वीर और विजयी सेनापति आ रहा है।'' परन्तु इस मोहक वाक्य को सुनने के पहले न जाने उसे कितनी बार कांटों और कीचड़ में चलना पड़ता है, फटे-पुराने नक्शों के साथ आधी रात के समय धुंधली रोशनी में बैठकर मस्तिष्क लड़ाना पड़ता है। जब हम और आप ऊनी कपड़े पहन कर खरटि लेते हैं उस समय उसे भीगे हुए कपड़ों के साथ मच्छरों के बीच, दलदली जमीन में, भूखे रहकर, सिर दर्द की परवाह न करते हुए, रात बितानी पड़ती है। उसे स्वयं अपनी और अपनी सेना की आवश्यकता, योग्यता, कमजोरी आदि का ज्ञान ठीक उसी तरह रहता है कि मानो लड़ाई में जाने के समय से घर वापस आने के समय तक अवश्यम्भावी विजय का पूरा कार्यक्रम उसने पहले ही बना लिया हो। इतना सब कर चुकने पर, उसके पहले नहीं, वह अपने देश-भाइयों को राष्ट्रीय-विजय की माला पहनाने के लिए वापस आता है और तभी उसकी 'जय' चिल्लाते चिल्लाते उसके देशवासियों के गले में सूजन हो जाती है।

ऊपर जो कुछ कहा गया है उसका एक अच्छा उदाहरण नैपोलियन है। उसकी महान आश्चर्यकारी सफलताओं का रहस्य क्या है? यही न कि, वह अपने सब कामों की तुच्छ से तुच्छ तफसीलों को स्वयं करता था। वह मातहतों को काम सौंपकर निश्चिन्त कभी नहीं बैठता था। उसके बारे में यहाँ तक कहा जाता है कि उसने, उस विश्वविजयी वीरशिरोमणि ने हम्माली और कुली का काम भी, समय पड़ने पर, स्वयं किया था। वह एक जगह स्वयं लिखता है कि छोटे बड़े सभी कार्यों को स्वयं करने में देखरेख करने की अपेक्षा उसे इतना अधिक आनन्द मिलता था ''जितना किसी तरुण युवती को उपन्यास पढ़ने में मिलता हो।''

छोटे-छोटे कामों के संयोग से बड़ा काम बनता है। मनुष्य भी छोटे से ही बड़ा होता है। छोटे-छोटे पंचतत्वों से ही यह सारी सृष्टि बनाई गई है। रेती के छोटे-छोटे कणों से अनन्त समुद्र का किनारा बनता है। छोटे-छोटे पाषाणखण्डों और वृक्षों से ही हिमालय का पहाड़ बना है और मनुष्य के समस्त जीवन का सुख भी, छोटी-छोटी बातों के सिवा किससे बनता है? छोटे के आधार से ही बड़े का बड़प्पन है। अपने अपने उचित स्थान और समय में छोटी चीजें भी बड़ी और महत्वपूर्ण हैं। इसलिए इनकी अवहेलना या तिरस्कार न करके इन पर उचित ध्यान दिये बिना किसी सफलता की आशा करना दुराशा मात्र है। ❁

गतांक से आगे–

स्वास्थ्य चर्चा

मेधा–वृद्धि के लिए

आवश्यकतानुसार बच लेकर कूट–पीसकर चूर्ण बना लें। इसमें इसके वजन के बराबर खाण्ड मिलाकर शीशी में सुरक्षित रखें। प्रतिदिन 3 ग्राम ओषधि गौ दुग्ध अथवा जल के साथ सेवन कराएँ। एक मास तक सेवन करने से मेधा की वृद्धि होती है।

बच को चाकू से छीलकर 2 ग्राम के लगभग भोजन के पश्चात् मुख में रखकर चबाते रहें। इस प्रकार भी यह बहुत लाभदायक है।

मोटा करने वाला योग

1. जौ की घाट (अन्न–विक्रेताओं से मिल जाती है, अथवा जौ को पानी में भिगोकर कूटें और उसका छिलका उतार लें) की खीर बनाएँ अर्थात् चावल के स्थान पर इस घाट का प्रयोग करें। इस खीर के प्रयोग से दो मास में शरीर मोटा हो जाता है।

2. दूध में शहद डालकर पिएँ।

मोटापा कम करने के लिए

1. प्रातः काल चावलों का गर्म–गर्म मांड नमक मिलाकर पिया करें।
2. गिलोय का चूर्ण और त्रिफला, दोनों 3–3 ग्राम लेकर प्रातः सायं मधु में मिलाकर चाटा करें।
3. भोजपत 10 ग्राम को चाय की भांति उबालकर पिया करें।
4. प्रतिदिन प्रातः पानी में शहद मिलाकर पिएँ।
5. प्रतिदिन प्रातः ताजा नीबू गर्म पानी में निचोड़कर पिया करें।
6. सूर्य के प्रकाश में खूब रहो, नग्न रहकर धूप सेंको।
7. हरी सब्जियों का सेवन करें, फल लें। चोकरवाले आटे की रोटी खाएँ। भोजन के साथ जल का सेवन न करें। भोजन के एक घण्टा पश्चात् थोड़ा–थोड़ा जल पिएँ।
8. 25 ग्राम नीबू के रस में 125 ग्राम पानी मिलाकर और यथास्वाद मधु मिलाकर शर्बत के समान खूब गड्डमड्ड करके पिला दें। शरीर में चाहे कैसी ही चर्बी बढ़ गई हो, घट जाती है। शरीर सुडौल बन जाता है।

भोजन हल्का और दिन में एक बार करें। सायंकाल केवल फल लें।

❁❁❁

त्रैतवाद

लेखक: रामस्वरूप आर्य, एटा (उ. प्र.)

ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों ही अनादि सत्ता हैं। ईश्वर कल्प कल्पान्तरों में अपने महान् ईक्षण द्वारा उपादान कारण प्रकृति से संसार की रचना करके हम सभी जीवात्माओं को खुले हाथों समर्पित कर देते हैं। पवित्र वेद की ऋचा ऊँचे स्वर से इसकी साक्षी दे रहा है।

ओ३म् द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।। –(ऋग्वेद)

दो सुन्दर शोभन गतिशील समान आख्या वाले पक्षीरूप एक ही संसार रूपी वृक्ष का सेवन करते हैं। उनमें एक कर्मफलरूपी पिप्पल को स्वादपूर्वक खाता है, किन्तु एक न खाता हुआ केवल साक्षीमात्र होता है।

श्री गोस्वामी जी महाराज त्रैतवाद को स्वीकार करते हैं–

चौ0 बीच में सीता सोहै कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।

माया प्रकृति, सृष्टि के विस्तार का कितना सुन्दर विवेचन किया है–

चौ0 गो गोचर जहाँ लगि मन जाई। सो सब माया जानउ भाई।।

अर्थात् जहाँ तक इन्द्रियों की पहुँच है वहाँ तक सभी माया है। इस माया (सृष्टि) का वर्णन करके गोस्वामी जी महाराज ने कितना अनुपम उल्लेख किया है–

चौ0 ताकर भेद सुनौ तुम सोऊ। विद्या अपर अविद्या दोऊ।।

सच में हम विद्या और अविद्या को साथ–साथ जानकर ही सृष्टि के भेद को जान सकते हैं। वेद भगवान इस सन्दर्भ में कितना सुन्दर उपदेश करते हैं–

ओ३म् विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।। –(यजु0 40.13)

जो मनुष्य विद्या (आचरण–रहित) शब्दार्थ ज्ञान मात्र और अविद्या अर्थात् ज्ञानादि गुणरहित कारणरूप परमेश्वर से भिन्न जड़ वस्तु इन दोनों को यथातथ्येन जानकर जीवन में प्रयोग करते हैं, वे अविद्या से मृत्यु को जीतकर विद्या अर्थात् ज्ञान से अमृत (परमपुरुष) परमात्मा को प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

यदि आप सृष्टि (माया) के रहस्य को जानना चाहते हैं तो ज्ञान और कर्म को साथ-साथ समझने का प्रयत्न करो अर्थात् ज्ञान पूर्वक कर्म करो। क्योंकि विद्या और अविद्या दोनों ही बन्धन का कारण है। जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती इस वेद मन्त्र का भाष्य करते हुए कहते हैं-कि विद्या कर्म क्रिया विशेष है ज्ञान विशेष नहीं ज्ञान विशेष कर्म भी तब तक सार्थक नहीं होता जब तक त्याग भाव न हों, बिना निष्काम भावना के विद्या भी बन्धन का कारण ही रहेगी। इसी कारण गोस्वामी जी महाराज ने विद्या तथा अविद्या दोनों को ही प्रकृति, (माया) जन्य बताया है। ❁

पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के उन पाठकों से विनम्र निवेदन है जिन्होंने वर्ष **2018 का वार्षिक शुल्क** बार-बार के पत्र लेखन तथा फोन द्वारा सूचना देने के बाद भी अभी तक जमा नहीं कराया है। वे वर्ष **2019** के वार्षिक शुल्क के साथ अविलम्ब **'सत्य प्रकाशन'** वेदमन्दिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा के कार्यालय को जमा करायें। शुल्क जमा न होने की स्थिति में पत्रिका बन्द कर दी जायेगी। आशा और विश्वास है कि पाठकगण अविलम्ब शुल्क भेजकर अपनी पत्रिका समयानुसार प्राप्त करते रहेंगे। जो महानुभाव ऑन लाइन द्वारा शुल्क जमा करते हैं वे फोन द्वारा कार्यालय को सूचित अवश्य करें ताकि उनका शुल्क जमा किया जा सके। वे पाठकगण धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समय से वर्ष 2020 का शुल्क जमा किया है।

-व्यवस्थापक

महापुरुषों की जयन्ती

स्वामी श्रद्धानन्द	2 फरवरी
महर्षि दयानन्द सरस्वती	12 फरवरी
जानकी जन्म (सीताजी)	12 फरवरी
सरोजिनी नायडू	13 फरवरी
समर्थगुरू रामदास	17 फरवरी
मदनलाल ढींगरा	18 फरवरी
छत्रपति शिवाजी	19 फरवरी

4 फरवरी	**विश्व कैंसर दिवस**
21 फरवरी	**मूलशंकर (दयानन्द) बोधरात्रि**

महापुरुषों की पुण्यतिथि

कल्पना चावला (भा0 अन्तरिक्ष यात्री)	1 फरवरी
सत्येन्द्रनाथ बोस	4 फरवरी
कन्हैयालाल मुंशी	8 फरवरी
पं0 दीनदयाल उपाध्याय	11 फरवरी
सुभद्राकुमारी चौहान	15 फरवरी
वासुदेव बलवंत फड़के	17 फरवरी
कस्तूरबा गांधी	22 फरवरी
स्वातन्त्र्यवीर सावरकर	26 फरवरी
चन्द्रशेखर आजाद	27 फरवरी
डॉ0 राजेन्द्रप्रसाद	28 फरवरी

ओम् आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा। *अर्थात् परमात्मा-सर्वरक्षक, सर्वव्यापक, ज्योतिर्मय, जगत् का बीज अविनाशी, सृष्टिकर्ता, सर्वाधार, अन्तर्यामी और सुखस्वरूप है।*

गतांक से आगे–

पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

बिना छूत के साधारण रोग

25. बच्चेदानी का बाहर निकलना

बुढ़ापे या कमजोरी के कारण या जेर गिराते समय जोर लगाने के कारण बच्चादानी बाहर निकल आती है। जब ऐसा अवसर आवे, तब उसको फिटकिरी के पानी से अच्छी तरह धोकर भीतर दबा दें और उस स्थान पर एक मुसका चढ़ा दें।

1. आध पाव फिटकिरी पानी में घोलकर पशु को पिलावे।

2. एक पाव सूखा कतीरा गोंद सबेरे–शाम खिलाकर आधी छटांक रसौत 2 सेर पानी में घोलकर पिलावें।

3. आधा तोला सोंठ और 1 तोला कालीमिर्च पाव भर गरम घी में मिलाकर 3–4 दिन तक पिलावें। बच्चेदानी को भीतर करके पशु को ऐसा खड़ा करें कि पिछला भाग ऊँचा रहे।

26. साडू रोग (Garget or Mammitis)

दूध वाले पशुओं के लिये यह बहुत बुरा रोग है। इसमें थन सूज जाते हैं। पशु थनों में हाथ नहीं लगाने देता। यह रोग कुसमय पर या बार–बार दूध निकालने से, थनों में चोट लगने से, गोबर करते समय पिछले पुट्ठों पर लाठी मारने से, दुहते समय थन जोर से खींचने से या धान का छिलका खा जाने से होता है।

1. रेंडी का तेल गरम करके थनों पर मलें।

2. पोस्ता के 1 डोडे को तथा नीम के पत्तों को सेर भर पानी में डालकर भाप से सेंक करें।

3. आध सेर दही और पाव भर मीठा तेल 3 दिन तक शाम को देना चाहिये।

4. आध सेर सहजन की पत्ती घोट–छानकर आधी छटांक कालीमिर्च और 1 छटांक नमक मिलाकर 3 दिन तक देना चाहिये।

5. आधा सेर घी, 1 छटांक कालीमिर्च और आध पाव नीबू का रस 3 दिन तक पिलावें।

6. जाड़े की ऋतु हो तो नमक, तेल और अजवाइन डालकर कांसी के बर्तन से पुट्ठे पर मालिश करें।

7. बीमारी अधिकक बढ़ गयी हो तो 1 सेर घी, 1 सेर गुड़ या शीरा, आध सेर काला जीरा तथा आध सेर कालीमिर्च डालकर पिलाना चाहिये।

8. दूध निकालकर फेंक देना चाहिये। पीब पड़ गयी हो तो चिरवाना ठीक है।

27. मुँहसड़ी या अँगियारी

यह भी थनों का रोग है और इसके भी वे ही कारण हैं, जो साडू रोग के हैं। थन के सोत के ऊपर एक छोटी पीली–सी पपड़ी जम जाती है और फिर फुंसी की तरह हो जाती है।

1. रेंडी के तेल में थोड़ा नमक डालकर गर्म करें और दिन में 4–5 बार मालिश करें।
2. नीम के पत्ते गरम करके भाप से सेंकें।
3. एक सेर पानी में 1 पाव कत्था घोल–छानकर पिलाना चाहिये।

28. चन्द्री

यह बहुत बुरा और हानिकारक रोग है। पहले थन के ऊपर छोटी–सी एक गिल्टी होती है, फिर थन सूजकर उसमें पीव पड़ जाती है। गिल्टी फूटकर थन में छेद हो जाय तो नीचे लिखी दवाइयाँ भर देनी चाहिये।

1. आकर का दूध, साँप की केंचुल और लहसुन–इनको बराबर पीसकर घाव के ऊपर लगा दें और सावधानी से पट्टी बाँध दें।

2. नीम की कोपलों को पीसकर एक टिकिया बनावे, उसे गाय के घी में लाल करें। फिर टिकिया फेंककर उस घी को घाव में दिन में 4–5 बार लगावें।

29. थन का मारा जाना (Blind Teats)

थन की किसी बीमारी से थन मारा जाता है और दूध नहीं निकलता। यह रोग है तो असाध्य, किन्तु संभव है नीचे लिखी दवाइयाँ लाभ कर जायँ।

जब थन मारी हुई गाय गाभिन हो जाये, तब 1 पाव सरसों का तेल प्रत्येक शुल्कपक्ष की दूज को बच्चा देने तक बराबर देते रहना चाहिए। बच्चा देने के कुछ घंटे पहले आधी छटांक हींग चने या जौ की रोटी में खिला दें।

यदि किसी पशु का थन जल्दी ही दो–चार दिन से बन्द हुआ हो तो आध पाव काली जीरी और आध पाव काली मिर्च पीसकर आधा सेर गरम पानी में मिलाकर दिन में दो बार 3 दिन तक देन चाहिये। अथवा 4–5 कागजी नीबुओं का रस 1 पाव घी में मिलाकर दोनों समय दीजिये।

30. थनों का कट जाना (Sore Teats)

1. तवा गर्म करके थन के नीचे रक्खे और दूध की धार छोड़ें। उसके भाप से लाभ होगा।

2. थोड़ा मक्खन या घी लेकर पिसी हुई हल्दी और थोड़ा नमक डालकर दूध दुहने के पीछे घाव के ऊपर लगा दें।

31. बच्चा देने के पीछे दूध न उतरना या थोड़ा उतरना

गाभिन होने पर कोई–कोई लोग पशु को दुहना एकदम बन्द कर देते हैं, जिससे थनों में दूध सूख जाता है और रोग हो जाता है। धीरे–धीरे दूध सुखाना चाहिये।

1. गरम घी और नमक से थनों और हवाने पर मालिश करना चाहिये और दूध थोड़ा बहुत अवश्य निकालना चाहिये।

2. दिन में एक बार हवाने पर बरांडी शराब मलना गुणकारी हे।

3. एक सेर सन के बीज का आटा 1 सेर शीरे में मिलाकर 3 भाग करें और दिन में 3 बार आठ रोज तक दें तो पूरा दूध उतर आता है।

4. गाय का दूध 2 सेर, गुड़ या शीरा 1 सेर, गेहूँ का दलिया 1 सेर मोटा चावल 1 सेर–इन सबको 2 सेर पानी में औटाकर आधा सबेरे और आधा शाम को देने से अच्छी जाति के पशु का दूध अवश्य बढ़ जाता है।

32. बाँझपन (Barrenness)

पैदा होते ही पूरा दूध न पाने पर, अच्छी खुराक न मिलने पर, समय पर सांड़ न मिलने पर या जुड़वा बच्चों में से एक नर तथा एक मादा होने पर उस मादा को प्रायः बाँझपन का रोग होता है।

1. आधी छटांक फास्फेट सोडा गरम पानी में डालकर योनि को बराबर धोते रहना।
2. किसी निपुण चिकित्सक से गर्भाशय का मुँह खुलवा देना।
3. गाय को बराबर सांड़ के साथ रखना।
4. दो सेर सन के हरे पत्ते रोज खिलाना।
5. एक सेर सन के बीज का आटा आध सेर गुड़ में मिलाकर 15 दिन तक खिलाना।
6. सात छुहारों की गुठली बासी जौ की रोटी में रखकर सात दिन तक खिलाना।
7. दो सेर अंकुर निकले हुए गेहूँ या जौ 15 तक खिलाना।
8. ढाई पाव मेथी महीन पीसकर पानी में लुगदी बनाकर 3–4 दिन तक सबेरे देना।

33. गाय का बार–बार गर्भस्राव होना

यह रोग गरम खुराक या गाय की गर्भधारण की शक्ति कम हो जाने से होता है। गर्म दूर करने के लिये गाय को ठंडी खुराक देनी चाहिये। एक बार गाभिन होते ही पाव भर घी में आधा तोला पिसी हुई कालीमिर्च मिलाकर दीजिये। इसके बाद नीचे की दवा दें।

1. गाभिन होने के बाद दो सेर लिसोड़े के हरे पत्ते खिला दीजिये। जिस दिन गाभिन हो, उस दिन खाना न दीजिये और दें तो कम तथा ठंडा।

2. गाभिन होने के 2–1 दिन पहले अंकुर निकले हुए 4 सेर गेहूँ या जौ खिला दीजिये। इसे 4–5

दिन तक खिलाइये।

3. पाव भर सफेद तिल रात में भिगो दें, सबेरे घोट-पीसकर गाभिन होने के दिन और 2 दिन बाद तक पिला दें। सर्दी के दिनों में इसे नहीं देना चाहिये।

34. सर्प का काटना

सर्प काटने का विश्वास हो जाने पर 5 भाग परमंगनेट पोटाश 95 भाग पानी में मिलाकर काटी जगह के भीतर पिचकारी से भर दें और काटी जगह के ऊपर रस्सी से कसकर बांध दें।

35. कुत्ते का काटना

पशु को कुत्ते के काटने से जो घाव हो जाय, उसको कास्टिक पोटाश से जला देना चाहिये। यह दवा न मिले तो लालमिर्च के बीज घाव में भर देना चाहिये।

-(शेष अगले अंक में)

व्रत पालक बनो

लेखक: अध्यापक किशोरीलाल गुप्त

ओ३म् अग्ने व्रत-पते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्य मुपैमि।। -(यजु0 1।5।।)

प्रिय बाल-विद्यार्थियो! पक्के इरादे का नाम वैदिक भाषा में 'व्रत' है। शायद तुम अभी तक यही समझते हो कि एक छाक दाल-रोटी न खाकर दूसरी छाक फल, दूध, दही, पेड़े, कूट्टू की पकौड़ी खाने का नाम ही 'व्रत' है। हाँ एक मायने में वह भी 'व्रत' है क्योंकि तुम इरादा कर लेते हो कि आज सिर्फ एक बार भोजन करेंगे, फलादि के सिवाय अन्य अन्न खायेंगे। किन्तु यह तो 'व्रत' की ए. बी. सी. डी. है; सब से छोटे दर्जे का व्रत है। असली 'व्रत' यह है-इरादा करलो कि आज से सिगरेट न पीएँगे; झूंठ न बोलेंगे; किसी की कोई चीज न चुराएँगे; किसी को गाली न देंगे; अपने बड़ों को सदा हाथ जोड़कर नमस्ते किया करेंगे; उनका आशीर्वाद लेंगे; उनकी शिक्षाओं पर चलेंगे; बुरी संगति से बचेंगे; माता पिता और गुरुजनों की आज्ञा पालन करेंगे; नित्य कसरत किया करेंगे; सन्ध्या करेंगे; स्वाध्याय किया करेंगे; नित्य स्नान करेंगे; दांत साफ रक्खेंगे; साफ वस्त्र पहनेंगे; समय पर भोजन करेंगे; मिर्च-खटाई और मसालों से बचेंगे; ब्रह्म मुहुर्त में प्रातः 5 बजे उठकर वायु सेवन करने बस्ती के बाहर जाया करेंगे; आदि-2 जितनी अच्छी बातें हैं उनसे प्रेम करेंगे; और जितनी बुरी और अनुचित बातें हैं उनसे बचेंगे। ये सब असली 'व्रत' है। यदि इन पर तुम चल सके तो तुम सच्चे 'व्रत-पाल' बन जाओगे।

बच्चो! जब तुमको सबेरे जल्दी उठकर पाठ याद करना होता है तो रात को 'मां जी' से यह कह

कर सोते हो ''जल्दी उठा देना''। माता वही करती है जो तुम दिल से चाहते हो। इस माता से कहीं अधिक ध्यान हमारा ''विश्वाधात्री मां'' रखती है। उसे कीडी से लेकर कुंजर तक, चींटी से लेकर हाथी तक की फिक्र है। संसारी मा सिर्फ दो आंख रखती है, 'विश्वमा' के सहत्रनेत्र हैं, अनन्त नेत्र हैं और वे भी साधारण नेत्र नहीं दिव्य नेत्र हैं। उसे घट-घट की खबर है। हमारी सच्ची लगन को, शुभ इच्छाओं को वह ''दैवी मा' झट ताड़ जाती है। यदि तुम अच्छे-2 व्रत पालन कर सकने की शक्ति उस दयावती, कृपाशीला 'मां' से माँगोगे, वह बड़ी प्रसन्नता से तुम्हें देगी।

यह वेद-मंत्र इसी प्रकार की प्रार्थना करने की शिक्षा दे रहा है-

अन्वयः-

हे अग्ने! हे व्रत-पते! अहम् इदम् व्रतं चरिष्यामि, तत् शकेयम्, तत् मे राध्यताम्। अहम् अनृतात् सत्यम् उपैमि।।

शब्दार्थः-

हे सर्वज्ञानवती, तेजवती, प्रकाशवती, विश्वम्भरा दैवी मा! हे व्रत-पालन मैं मेरी सहायता करने वाली करुणामयी, जगज्जननि! (अहम्) मैं, (इदम व्रतम्) इस शुभव्रत को (चरिष्यामि) अपने आचरण में, अमल में लाने की कामना करता हूँ, (तत्) इसे (शकेयम्) पूरा कर सकने की शक्ति के लिये प्रार्थना करता हूँ, (तत्) उस शक्ति की (मे) मेरे लिये, (राध्यताम्) प्रसन्न होकर देने की कृपा कर। जिससे (अहम्) मैं, (अनृतात्) असत्य से, अनुचित व्यवहार से, (सत्यम्) सत्य व्यवहार, सत्य आचरण को (उपैमि) प्राप्त होऊँ।

व्याख्याः-

इस मंत्र में 'अग्नि' शब्द का प्रयोग बड़ा ही उपयुक्त हुआ है। इस बात का जानना बड़ा कठिन है कि कौनसा काम उचित है और कौनसा अनुचित। एक ही बात आज उचित समझी जा सकती है, और कल को अनुचित देशकाल और पात्र का ज्ञान होना आवश्यक है। इसका ठीक-2 ज्ञान उसी शक्ति को हो सकता है, जो सर्वज्ञ है। हमारी आत्मा अपना प्रकाश उसी अग्नि देव से तेज, प्रकाश और ज्ञान के भंडार से प्राप्त करती है। उसी झलक से हम उचित अनुचित, पाप-पुण्य, बुराई-भलाई को जान लेते हैं। वही शक्ति हम को असत्य मार्ग से हटाकर सत्य-पथ पर चलाती है। जब तक उसका प्रकाश हमें न होगा हम (अन्-ऋत्) असत्य बातों की तरफ ही झुके रहेंगे। ❁❁❁

क्रूर काल के कुटिल करों से,
मैं भी कभी छला जाऊँगा।
रोता हुआ धरा पर आया,
गाता हुआ चला जाऊँगा।।

कभी कुछ और कभी कुछ

रचयिताः कवि गोपालशरणसिंह

बराबर एक पथ पर तुम नहीं चलते नजर आते।
कभी इस ओर हो जाते कभी उस ओर हो जाते॥
कभी तो तुम हमें निज छबि-सुधा सन्तत पिलाते हो।
कभी फिर दर्शनों के हित हमें दिन रात तरसाते ॥ 1॥

कभी तो रूठ जाने पर हमें बहुविध मनाते हो।
कभी फिर बोलने की भी कृपा हम पर न दिखलाते॥
कभी आकर स्वयं हमसे विनययुत याचना करते।
कभी मम प्रार्थना को भी न तुम हो चित्त में लाते॥ 2॥

कभी बन कर सुधाकर तुम सुधाधारा बहाते हो।
कभी विष-वारि-बूँदों को निरन्तर खूब टपकाते॥
कभी अलि बन स्वयं पंकज-कली हमको समझते हो।
कभी फिर मान कर चम्पा हमारे ढिंग नहीं आते॥ 3॥

कभी तुम प्रेम के जल से हृदय-वल्ली खिलाते हो।
कभी उसको उपेक्षा के अनल से खूब झुलसाते॥
कभी तुम पूर्ण आशा की विमल ज्योत्सना दिखाते हो।
कभी नैराश्य की काली निशा हो सामने लाते॥ 4॥

कभी तो प्रेम का शुभ-पाठ तुम हमको पढ़ाते हो।
कभी फिर प्रेम की बाजी स्वयं ही हार तुम जाते॥
कभी वीणा बजा कर तुम रिझाते अमृत बरसाते।
कभी तुम फिर हमें हरदम खिझाते क्लेश पहुंचाते॥ 5॥

कभी तो प्रेम से मिल कर गले हमको लगाते हो।
कभी करके किनारा तुम हमें अत्यन्त कलपाते॥
कभी तो कुसुम से कोमल हमें तुम ज्ञात होते हो।
कभी कर्कश कुलिश जैसे कठोराकार हो जाते॥ 6॥

❁❁❁

"महर्षि जन्म से आज तक की महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक घटनाएँ इसी भाँति"

लेखकः खुशहालचन्द्र आर्य, कोलकाता

1. महर्षि दयानन्द का जन्म– महर्षि जी का जन्म 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में काठियाबाड़ के मोरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा नामक स्थान में 12 फरवरी स् 1825 (फाल्गुन कृष्णा दशमी सम्वत् 1881) के दिन कर्षण जी तिवारी माता अमृतावेन औदीच्य ब्राह्मण के घर हुआ। पिता जी ने बेटे का नाम मूलशंकर रखा, जिनको प्यार से घर के कुछ लोग दयाल जी के नाम से भी पुकारते थे।

2. पहला स्वतन्त्रता संग्राम– भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम 1857 में हुआ जिसको अंग्रेजों ने सैनिक विद्रोह के नाम से सम्बोधित किया, परन्तु वीर सावरकर के विचारोनुसार यह भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम था जिसको साधु-सन्तों व संन्यासियों ने योजनाबद्ध तरीके से बनाई थी, जिसमें स्वामी दयानन्द के सद्गुरु स्वामी विरजानन्द, स्वामी विरजानन्द के सद्गुरु स्वामी पूर्णानन्द आदि ने मुख्य रूप से भाग लिया और देश के अधिकतर राजाओं व नबाबों ने भाग लिया। जिनमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब पेशवा, तात्यां टोपे, राव तोलाराम, राजा कुंअरसिंह मुख्य थे। इस स्वतन्त्रता संग्राम का समय 31 मई 1857 रखा गया था, परन्तु मंगल पाण्डे की जल्दबाजी से 29 मार्च 1857 में आरम्भ हो गया। जिसके कारण यह असफल हो गया। इसके पीछे कारण यह था कि अंग्रेजों को पहले मालुम हो जाने से इस संग्राम को कुचलने का समय मिल गया।

3. महात्मा गांधी का जन्म– महात्मा गांधी का जन्म पोरबन्दर (गुजरात) में 1869 में हुआ जिनका देश को आजादी दिलाने में सबसे अधिक योगदान माना जाता है।

4. आर्यसमाज की स्थापना– देश में बढ़ता हुआ अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाने के लिए देव दयानन्द ने भक्तजनों के कहने से 10 अप्रेल 1875 (चैत्र शुक्ला पंचमी संवत् 1932) में गिरगाँव मोहल्ला डॉ0 माणिकचन्द जी की वाटिका मुम्बई में स्थापित की। जिसने महर्षि जी की मृत्यु के बाद अन्धविश्वास को मिटाने तथा देश को आजादी दिलवाने में बहुत बढ़-चढ़कर भाग लिया।

5. महर्षि जी की मृत्यु– महर्षि दयानन्द की मृत्यु नन्हींजान वेश्या के जहर में कांच पीसकर मिलाने से 30 अक्टूबर 1883 में अजमेर में हुई।

6. कांग्रेस की स्थापना– कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में डॉ0 ह्यूम ने प्रजा का सम्पर्क सरकार से बनता रहे इसलिए एक पुल का काम करने के लिए बनाई थी बाद में महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में सन् 1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण आजादी की प्राप्ति की घोषणा कर दी। इसी समय सन् 1885 में आर्यसमाज कलकत्ता की स्थापना हुई।

7. डी. ए. वी. की स्थापना– लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, लाला हरदेव सहाय एम. ए.

आदि ने मिलकर सन् 1886 में लाहौर में डी. ए. वी. की स्थापना की जिसके प्रथम हेड मास्टर महात्मा हंसराज जी बिना वेतन लिए हुए जिसके कारण डी. ए. वी. में पढ़े हुए विद्यार्थियों ने अन्धविश्वास को मिटाने तथा आजादी दिलाने के काम में बहुत अधिक सहयोग दिया जो विस्मरणीय है।

8. गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना– गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना श्रद्धानन्द ने सन् 1902 में हरिद्वार में की जिसका मुख्य उद्देश्य विश्व में वेद प्रचार करना था।

9. वीर सावरकर ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई– वीर सावरकर ने सन् 1897 में चापेकर बन्धुओं के बलिदान से प्रेरणा लेकर देशभक्ति का पाठ पढ़ा और 1905 में विदेशी कपड़ों की होली जलाई।

10. इंग्लैण्ड में इण्डिया हाउस की स्थापना– श्यामकृष्णा वर्मा जो महर्षि दयानन्द का पक्का शिष्य था, उन्हीं की प्रेरणा से वर्मा जी इंग्लैण्ड गये और 1906 में इण्डिया हाउस की स्थापना की जिसमें भारत के क्रांतिकारियों के रहने की पूरी व्यवस्था थी जिसमें लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द जैसे क्रान्तिकारियों ने काफी काम किया। यहीं रहकर वीर मदनलाल ढींगरा ने कर्जन वायली का वध किया जो भारत के क्रान्तिकारियों को सजा दिलाने में बड़ा सहयोग करता था। वर्मा जी 1907 में वीर सावरकर को इसकी जिम्मेवारी संभालकर स्वयं फ्रांस चले गये।

11. आर्यसमाज बड़ा बाजार– आर्यसमाज बड़ा बाजार की स्थापना सन् 1906 में हुई।

12. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना– स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा नारायण स्वामी ने सब आर्यसमाजों को जोड़ने के लिए 1909 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की। पर दुःख की बात है कि इस समय इसके तीन भाग बने हुए हैं जिससे आर्यसमाज लड़ाई-झगड़े का दंगल बना हुआ है।

13. लार्ड हार्डिंग की सवारी पर बम फेंका गया– सन् 1912 में लार्ड हार्डिंग दिल्ली के नये वायसराय बन कर आये। इससे पहले वायसराय कलकत्ता में ही रहते थे। इसलिए 23 दिसम्बर 1912 को बड़ी धूमधाम से भारी सुरक्षा के बीच लार्ड हार्डिंग का जुलूस निकाला गया। जुलूस जब चांदनी चौक से निकल रहा था तो कहीं से बम आकर फूटा जिससे वायसराय तो बाल-बाल बच गया परन्तु इसका एक अंगरक्षक मारा गया। यह बम एम योजना के तहत वीर क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस ने बसन्तकुमार विश्वास से फिकवाया था। इस काण्ड से सरकार बहुत सचेत हो गई और बहुत कड़ी कार्यवाही की जिससे चार महान् क्रान्तिकारी मास्टर अमीचन्द, भाई बालमुकुन्द, अवधबिहारी व बसन्तकुमार विश्वास को फांसी हुई। रासबिहारी बोस किसी प्रकार से बच गया और वह 1915 में भारत छोड़ जापान चला गया और वहीं बस गया।

14. प्रथम विश्व युद्ध– अमेरिका और इंग्लैण्ड एक ओर तथा दूसरी ओर जर्मनी, जापान और

इटली के बीच 28 जुलाई 1914 से 11 नवम्बर 1918 तक प्रथम विश्व युद्ध हुआ जिसमें एटम बम के प्रयोग से अमेरिका और इंग्लैण्ड की विजय हुई।

15. जलियांवाला बाग का काण्ड– जलियांवाला बाग का काण्ड 13 अप्रेल 1919 में हुआ था। उस दिन बैसाखी का त्यौहार था और इन दिनों आजादी लेने की हवा बड़ी तेजी से चल रही थी। जलियांवाले बाग में कांग्रेस के दो नेता सत्यपाल व सैफूद्दीन किचलू वैसाखी त्यौहार के दिन आजादी प्राप्ति के लिए व्याख्यान दे रहे थें हजारों की संख्या में देशभक्त लोग इकट्ठे हो रहे थे तभी जनरल डायर ने निर्दोष निहत्थों पर गोली चलवा दी जिसमें हजारों की संख्या में लोग मारे गये और घायल हो गये। सरदार ऊधमसिंह इस काण्ड को देखने वाला था, उसने उसी दिन यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं जनरल डायर को मारुँगा। उसको कोशिश करते–करते 21 वर्ष निकल गये और सन् 1940 में उसने इंग्लैण्ड में मारकेल डायर को मारा जिसने जनरल डायर को गोली चलवाने का आदेश दिया था और जो पंजाब का गवर्नर था। तब तक जनरल डायर मर चुका था। इस प्रकार ऊधमसिंह ने अपनी प्रतिज्ञा को 21 वर्ष बाद पूरा किया। यह काण्ड अमृतसर में हुआ था।

16. कांग्रेस का अधिवेशन– सन् 1919 में कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में होने वाला था लेकिन जलियांवाले काण्ड के कारण अमृतसर की हालत बहुत खराब थी इसलिए अधिवेशन करने की किसी की हिम्मत नहीं थी। ऐसे समय में स्वामी श्रद्धानन्द ने यह जिम्मेवारी ली और स्वागताध्यक्ष बन कर अधिवेशन को पूर्ण सफल बनाया जिससे स्वामी श्रद्धानन्द का यश चारों ओर बहुत बढ़ गया।

17. महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन– महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया जिसमें विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का नारा दिया गया। जो काफी सफल, परन्तु 13 मार्च 1922 में गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया जिससे आन्दोलन ठण्डा पड़ गया फिर 31 दिसम्बर 1929 में लाहौर के अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य लेने की घोषणा की।

18. काकोरी काण्ड– यह काण्ड काकोरी स्टेशन पर वीर क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में 9 अगस्त 1925 का हुआ जिसमें अंग्रेजों का खजाना लूटा गया।

19. संसद भवन पर बम फेंका गया– संसद भवन पर 8 अप्रेल 1929 को सरदार भगतसिंह व बटकेश्वर दत्त ने बम फेंका था और पर्चे भी फेंके थे, यह दिखाने के लिए कि देश में क्रान्ति फैल गई है अब अंग्रेजों को जल्दी ही भारत छोड़ कर जाना पड़ेगा।

20. तीन क्रान्तिकारियों को फांसी– 23 मार्च 1931 को देश में क्रान्ति फैलाने के जुल्म पर तीन क्रान्तिकारियों को फांसी दी गई जिनके नाम हैं सरदार भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरु।

21. महात्मा गांधी की नमक के लिए डण्डी यात्रा– अंग्रेजी राज्य में जनता पर नमक बनाने

का कानूनी प्रतिबन्ध था। महात्मा गांधी 5 अप्रेल 1930 को सावरमती के पास डण्डी नामक स्थान पहुंचे और वहाँ नमक बनाकर कानून को तोड़ा।

22. सुभाषबाबू को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया– सन् 1939 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन त्रिपुरा में था उसमें गांधी जी का प्रतिनिधि पट्टामि सितारामैया का मुकाबला सुभाषबाबू से था। उसमें सुभाष बाबू की विजय हो गई तब गांधीजी ने कहा कि पट्टामि सितारामैया की हार मेरी हार है। इस पर सुभाषबाबू ने कांग्रेस से अस्तीफा दे दिया और अपनी अलग पार्टी फारवर्ड ब्लॉक बना ली। मेरी समझ में इस कार्य से गांधी जी ने लोकतन्त्र पर आघात किया है जो अनुचित है।

23. सुभाषबाबू का जापान के लिए पलायन– एक बहुत बड़े क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस के बुलाने पर सुभाषबाबू जर्मनी के लिए चले गये वहाँ साठ हजार भारतीय सैनिक जो अंग्रेजी सेना के रूप में जर्मन और जापान की सेना से लड़ रहे थे उनको बन्दी बनाकर जापान में रखा हुआ था। उनको रासबिहारी बोस देशभक्ति की शिक्षा दिया करता था। वे सारे सैनिक रासबिहारी ने सुभाष बोस के जिम्मे दे दिया। सुभाषबाबू ने उन साठ हजार बन्दियों की आजाद हिन्द फौज बनाई और अंग्रेजों से लड़ना आरम्भ कर दिया और अण्डमान निकोबार टापुओं समेत भारत का इम्फाल का काफी भू–भाग जीत लिया था। सुभाषबाबू की सेना जापान के सहयोग से ही लड़ रही थी। जब इंग्लैण्ड और अमेरिका ने जापान के टोकियो शहर पर एटम बम डाल दिया तो जापानी सेना हारने लगी और सुभाषबाबू को सहायता देना बन्द कर दिया तब सुभाषबाबू 18 अगस्त 1945 को हवाई जहाज में बैठकर जापान जा रहे थे तब ताईवान के पास हवाई जहाज में आग लग गई और वह गिर पड़े। तब से सुभाषबाबू लापता हैं और आज तक उसका पता नहीं चला कि सुभाषबाबू जीवित हैं या मर गये।

24. भारत का आजादी दिवस– महात्मा गांधी और क्रान्तिकारियों के बलिदानों से 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये और भारत आजाद हो गया। कांग्रेस के हाथ में बागडोर आ गई और जवाहरलाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

25. गांधीजी की मृत्यु– 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे के गोली मारने से गांधी जी की मृत्यु हो गई।

26. भारत का गणतन्त्र दिवस– 26 जनवरी 1950 को अंग्रेजों ने भारत को पूर्ण आजादी दे दी तब भारत ने अपना गणतन्त्र (प्रजातन्त्र) दिवस मनाया और डॉ0 राजेन्द्रप्रसाद देश के प्रथम राष्ट्रपति बने।

27. सरदार बल्लभभाई पटेल की मृत्यु– भारत स्वतन्त्र होने पर प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू बने और सदार पटेल उप–प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री बने। वे एक सुदृढ़ नेता थे, उन्होंने अपने पराक्रम से 565 देशी रियासतों को भारत में मिलाकर एक सुदृढ़ भारत बनाया। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 में गुजरात में हुआ था और 15 अक्टूबर 1950 में मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से भारत को बहुत बड़ा धक्का लगा।

–(शेष अगले अंक में)

वीर्य रक्षण करने की युक्ति

लेखकः श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

ब्रह्मचर्य अर्थात् वीर्य रक्षण करने के उपायों के विषय में अनेक लोग तथा विशेषकर तरुण विद्यार्थी उनके हित के लिये यहाँ कुछ लिखता हूँ। इन बातों का कई मित्रों के शरीर पर अनुभव देखने के कारण इनके अनुष्ठान में कोई धोखा नहीं है। तथा इनके अनुष्ठान से इष्टसिद्धि अवश्य ही होती है। परन्तु शरीर की प्रकृति के भेद के कारण फल के विषय में कुछ न्यूनाधिक होना संभव है।

ब्रह्मचर्य, वीर्यरक्षण, संयम, दमन, इन्द्रिय निग्रह, ऊर्ध्वरिता होना, अमोघ वीर्य बनना आदि शब्दों का मूल तात्पर्य प्रायः एक सा ही है। ब्रह्मचर्य और वीर्य रक्षण ये शब्द आजकल एक ही अर्थ से प्रयुक्त होते हैं। संयम, दमन, इन्द्रिय निग्रह इन शब्दों में यद्यपि अन्य इन्द्रियों की स्वाधीनता का भाव व्यक्त होता है, तथापि उन सबका मुख्य उद्देश्य उपस्थ इन्द्रिय का निग्रह करने में ही है। ऊर्ध्वरिता होने का तात्पर्य इतना ही है कि, साधारण स्थिति में वीर्य का प्रवाह नीचे की ओर होना स्वाभाविक भी है; परन्तु वीर्य का प्रवाह नीचे होने से, वीर्य भ्रष्ट हो जाता है, और उससे शरीर निवीर्य बनता है, जिसके कारण मस्तिष्क की दिमाग की शक्ति भी न्यून होती है और अन्त में मनुष्य न तो शारीरिक कार्य करने के योग्य रहता है और न मानसिक कार्य करने के योग्य बन सकता है; इसलिये मानसिक इच्छाशक्ति द्वारा वीर्य का प्रवाह निम्न भाग में कराके, उसकी **'ऊर्ध्वगति'** करनी और वीर्य को अपने पृष्ठ वंश में से मस्तक तक पहुंचाना; यही **'ऊर्ध्व–रेता'** होने का तात्पर्य है। जिसका वीर्य इस प्रकार ऊर्ध्व मार्ग से ऊपर दिमाग तक पहुंचता है, उसकी दिमाग शक्ति अपूर्व होती है, शरीर की कांति बड़ी रमणीय होती है तथा सब प्रकार की प्रसन्नता उसकी वृत्ति में रहती है। इसलिये ऊर्ध्वरिता बनने का यत्न हर एक को अवश्य ही करना चाहिये। **'अमोघवीर्य'** का तात्पर्य यह ह कि, वीर्य का बिन्दु योनिस्थान में चले जाने के पश्चात् अवश्य ही इच्छा के अनुसार संतान उत्पन्न हो अर्थात् यदि लड़का पैदा करने की इच्छा है तो लड़का ही हो, और यदि लड़की पैदा करनी है तो निश्चय से लड़की ही हो। इतना ही नहीं परन्तु जिस प्रकार के गुण धर्म से युक्त लड़का अथवा लड़की उत्पन्न करने की माता–पिता की इच्छा हो, उसी प्रकार का लड़का अथवा उसी प्रकार की लड़की उत्पन्न हो। बृहदारण्यक उपनिषद् के अन्तिम अध्याय में अपनी इच्छानुसार लड़का अथवा लड़की उत्पन्न करने के उपाय दिये हैं। पाठक इसलिये उस उपनिषद् का प्रकरण अवश्य देखें। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि वृत्ति धर्मों से युक्त संतान उत्पन्न किये जा सकते हैं, इतना ही नहीं, प्रत्युत विद्वान्, तत्वज्ञानी आदि प्रकार के विशिष्ट उच्च योग्यता के भी संतान **'अ–मोघ–वीर्यत्व'** की प्राप्ति करने पर हो सकते हैं। विशिष्ट उच्च संतान उत्पन्न करना यह बात दैवयोग की

–(शेष पृष्ठ संख्या 27 पर

शान्ति सामा शान्तिरेधि

रचयिता: बहिन शान्ति नागर, आगरा (उ० प्र०)

हे प्रभो! शान्ति सा (वह शान्ति) मा (मुझे दीजिए) शान्तिः (शान्ति की) एधि (वृद्धि हो)।

शान्ति हो जल थल गगन में,
शान्ति पृथिवी और पवनमें,
शान्ति हो मानव के मन में,
'शान्ति सा मा शान्तिरेधि'।।

अज्ञानवश भूले हैं अपने कर्म को,
दम्भवश भूले हैं अपने धर्म को,
स्वार्थवश भूले हैं अपने देश को,
मोहवश भूले हैं हम परमेश को।
लोभ का मन पर चढ़ा है आवरण,
दानवों सा कर रहे हैं आचरण,
दोष दुर्गुण हटें पायें शान्ति फिर,
'शान्ति सा मा शान्तिरेधि'।।

उठो माला शब्द सुमनों की बनायें,
आरती में प्यार का दीपक जलायें,
उल्लास की कुंकुम धरें उर-थाल में,
कर्म के अक्षत चढ़े हर काल में।
अर्घ्य दें सम्मान में सद्‌भावनायें,
उठो मिलकर शंख जागृति का बजायें,
दूर हों सब दुरित और सुख शान्ति हो,
'शान्ति सा मा शान्तिरेधि'।।

मातृ भू की गोद में जो सो गये,
रज लगी मस्तक उसी के हो गये,
पीठ पर गोली नहीं खायी कभी,
मातरम् वन्दे ये बोले थे सभी।
प्राण से प्यारी थी भारत की जमीं,
भूल जायें उन शहीदों को नहीं,
अनुसरण उनका करें सुख शान्ति हो,
'शान्ति सा मा शान्तिरेधि'।।

चाहते अपने लिए व्यवहार जैसा,
दूसरों के प्रति करें व्यवहार वैसा,
मधुरतामय निष्क्रमण और आगमन हो,
मधुरतामय त्याग हो और संवरण हो।
संतोष संयम शीलता की साधना,
सहिष्णुता की हो सदा आराधना,
स्वर्ग बन जाये धरा सुख शान्ति हो,
'शान्ति सा मा शान्तिरेधि'।।

❀❀❀

प्यार की सीमा नहीं पहिचानते हैं,
ये हठीले कब किसी की मानते हैं।
आप जानें या न जानें फिक्र क्या है,
हृदय की भाषा नयन तो जानते हैं।।

कन्याएँ कितनी महिमामयी ?

लेखकः प्रियवीर हेमाइना, विपिन गार्डन, नईदिल्ली

कन्याएँ कितनी महिमामयी जो संवारती दो कुलों को।
कन्याएँ कितना प्यारा धन, जो न रुचता बस दुर्कुलों को॥
दुर्कुल करते इनकी हत्या, लोक में आने से ही पूर्व।
वे न समझते इनकी महिमा, प्रभु ने जो दी इन्हें अपूर्व॥
दिया प्रभु ने कन्याओं को, "मातृशक्ति" का इक वरदान।
भर दिया हृदय में इनके ही, दया ममता का अनुपम दान॥

विनम्रता औ कोमलता में, क्या कोई है इनके समान?
बसते हैं बस वहीं देवता, जहाँ होता इनका सम्मान॥
जहाँ न मिलता इनको सम्मान, क्रियाएँ सभी होती निष्फल।
कोई भी देश न देख सके, कन्याओं बिना स्व-सुन्दर कल॥
हा! पुत्रियों के जन्म से ही, हम क्यों हैं डूबते शोक में?
पर होवे न इनका जन्म तो, होवे पुत्र कैसे लोक में?

कन्याएँ यदि देवी देवकी न होती, कृष्ण-सी आत्मा कहाँ पाते?
उस योगिराज की गीता का, वह ज्ञान कहाँ से हम पाते?
यदि जीजाबाई ना होती, क्या वीर शिवाजी हम पाते?
यदि लक्ष्मीबाई ना होती, 'मर्दानी' शब्द कहाँ पाते?
आदर्श माता ने ही एक, था दिया हमें वह दयानन्द।
जिसने वैदिक शिक्षाओं से, दिया जन-जन को सौख्यानन्द॥

वह विद्यावती न होती यदि, मिल जाता क्या वह हमें सिंह?
इतिहास में स्वाधीनता के, है सुनाम जिसका-भगतसिंह॥
नहीं लोक में होती माता, वही रामदुलारी यदि यहाँ।
वह लालबहादुर शास्त्री सा, वह लाल महान् मिलता कहाँ?
बदलो अपनी निकृष्ट सोच, मानो अमूल्यतम कन्या को।
कन्या भ्रूण हत्या का पाप, पाओ न नष्ट कर कन्या को॥
कन्या भ्रूण हत्या करके, क्यों पाप के भागी बनते हो?
ईश्वर की न्याय-व्यवस्था में, क्यों दण्ड के भागी बनते हो?

❁❁❁

धन्य थे वे ऋषि

लेखकः मदनमोहन एडवोकेट

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः
अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मे ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (अथर्व. 10। 7। 33)

आदि सृष्टि में पुनः पुनः नित होता नव निर्माण
शोभित सूषुमित सूर्य चन्द्र हैं जिसके चक्षु समान
अंगार ही शृंगार है जिसके आनन का अभिराम
ज्योति स्वरूप विराट् ब्रह्म को शत–शत मेरा नम्र प्रणाम।

अथर्ववेद के उक्त मंत्र में वर्णित विराट् ब्रह्म के दर्शन की उर में उत्कट उत्कण्ठा लेकर ही पार्थिव शंकर की शंकरीय शक्ति में शंका से सशंकित, पितृव्य एवं भगिनी की मृत्यु पर मौन, मूलशंकर शूलों की शय्या पर शयन करते, निर्जन वन में निर्भीक भ्रमण करते, शत्रुञ्जय से मृत्युञ्जय बनने की ज्ञान पिपासा से प्रेरित–मथुरा की मनोहर नगरी में गूढ़ ज्ञानी गुरु का पता लगाने में सफल हो ही गये।

द्वार जाकर खटखटाया, अन्दर से यह प्रश्न आया,
कौन है तू कौन है ?
हृदपट खोले, ऋषिवर बोले, चिन्ताओं में मग्न होकर मौन हूँ
बस यही तो जानना है–कौन हूँ मैं कौन हूँ?

अनुपम आत्म–अभिज्ञान की अभिलाषा देख प्रज्ञाचक्षु गद्‌गद् हो गए, आलिंगन किया अन्तर से आशीर्वाद दिया 'मूल ज्ञान' प्राप्ति के आनन्द से दयानन्द बन गये। सच्चे शिव का पता लगाया, वेदों का डंका बजाया, शाश्वत सन्देश सुनाया, अज्ञान मिटाया भारी भ्रम में भटकते हुये आर्त जगत् ने गले लगाया एक नवीन दिव्य ज्योति की ज्वाल जगी जिसमें सामाजिक कुचाल के जाल जंजाल भस्म हो गये।

दयानन्द आये, वेदों के अलौकिक ज्ञान से अपने को पहिचानकर , सच्चे शिव का सन्देश सुनाकर इसी विराट् में विलीन हो गये। आज भी उस दिव्य सन्देश की झंकार से जन–जन के मन में यही पुकार उठती है। '–

"यदि हमें मूल न मिलता,
समाज का फूल कोई न खिलता।
मझधार ही में रहती वैदिक पतवार बिन,
भारत की आरत तरणि को कूल कभी न मिलता।"

धन्य थे हमारे ऋषि! ❁

बुढ़ापा आपके मन का भ्रम मात्र है

सामान्यतः देखा जाता है कि व्यक्ति 40-50 की आयु के बाद अपने को वृद्ध समझने लगता है। कुछ करने की, आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षायें बुझ जाती हैं। स्वास्थ्य और सामर्थ्य होने पर भी यह मानसिक धारणा कि 'वे वृद्ध हो गये हैं' उनकी शक्तियों को पंगु बना डालती है। वस्तुतः देखा जाये तो विश्व के महापुरुषों ने अपने ख्याति प्राप्त कार्य 50-60 वर्ष की आयु के बाद ही किये हैं क्योंकि वर्षों का संचित अनुभव उनकी सहायता करता है, यौवन शारीरिक अवस्था मात्र नहीं है अपितु शक्ति और सामर्थ्य का, आनन्द और उल्लास की सृजन शक्ति का दूसरा नाम ही यौवन है। गेलार्ड हाजर का कथन है-'उम्र का सम्बन्ध आदमी के शरीर, आत्मा और मन से है। कैलेन्डर से उसका कोई सम्बन्ध नहीं।

महापुरुषों के जीवन पर यदि दृष्टि डालें तो स्पष्ट हो जायेगा, कि आयु का बन्धन न मानने वाले व्यक्ति तथाकथित वृद्धावस्था में भी महान् कार्य करते हैं। महात्मा गांधी ने 63 वर्ष की आयु में और उसके बाद भी अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। उनका कथन था-'मुझे तो ख्याल भी नहीं आता कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। जिस आदमी को ऐसा लगता हो, वह क्या पाठशाला के एक विद्यार्थी की तरह उर्दू का अध्ययन करेगा? तामेल, तेलगू और बंगला का अध्ययन करने के सपने देखेगा?' और सचमुच ही उन्होंने वृद्धावस्था में भी इन लिपियों तथा भाषाओं का अध्ययन किया।

नोबिल पुरस्कार विजेता विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर 90 वर्ष की आयु तक निरन्तर साहित्य-साधना में लगे रहे। परिणामतः वे श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियाँ हमें देते रहे और विश्ववन्दनीय बने।

अंग्रेजी साहित्य के प्रसिद्ध कवि मिल्टन ने अपनी विश्व प्रसिद्ध कृति 'पैराडाइज लास्ट' की रचना 50 वर्ष की आयु में तथा 'पैराडाइज रीगेन्ड' की 62 वर्ष की अवस्था में की थी। जर्मन कवि गेटे ने 80 वर्ष की आयु में अपनी महत्वपूर्ण कृति 'फास्ट' पूरी की थी। महान् दार्शनिक बैनैदित्तो क्रोचे 80 वर्ष की आयु में भी कठिन श्रम करते थे। वे प्रतिदिन 10 घंटे निश्चित रूप से कार्य करते थे। 85 वर्ष की आयु में भी उनकी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। प्रसिद्ध चित्रकार टीटान ने 98 वर्ष की आयु में अपना ऐतिहासिक चित्र 'बैटिल आफ लिमान्टो' का अंकन किया था।

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री विंस्टन चर्चिल 70-80 साल की आयु के उपरान्त भी शक्तिशाली डायनेमो के समान अपना कार्य करते रहे। अपनी क्रियाशीलता, अदम्य उत्साह तथा शक्ति के कारण वे इस आयु में भी 'उज्ज्वल भविष्य वाले युवा' कहे जाते थे।

❁❁❁

आगई शिव रात्रि

आगई शिव रात्रि फिर हमको जगाने के लिये।
डूबती किश्ती मनुजता की बचाने के लिये,
पूजते जड़ को रहे तज एक अनुपम ईश को,
'सच्ची शिव पूजा' जगत् को फिर सिखाने के लिये।
अन्धश्रद्धा पत्र झड़, सद्धर्म कोपल उग सकें,
विश्व की बगिया में यों ऋतुराज लाने के लिए।
एक मानव दूसरे के रक्त का प्यासा बना,
उसको मतवादों की खाई से उठाने के लिए।
धर्म केवल एक वैदिक, आर्य प्यारा नाम है,
ओ3म् एक अधार सबका, यह जताने के लिये।
है हमारा एक ही गुरुमन्त्र 'गायत्री' महत्,
एक अभिवादन 'नमस्ते' ध्वनि गुँजाने के लिये।
एक भाषा, भाव, संस्कृति, एक जीवन-सूत्र में-
गूँथ कर श्री राम का फिर राज्य लाने के लिये।
जय-जयति हो राम की और कृष्ण की सर्वत्र फिर,
युग पुरुष ऋषिराज का कीर्त्तन कराने के लिये।

❁❁❁

पृष्ठ संख्या 22 का शेष-

वास्तविक नहीं है। परन्तु मनुष्य अपने आत्मिक बल से सम्पन्न होने पर उक्त सिद्धि उसको प्राप्त हो सकती है। साधारण रीति से '**अमोघवीर्य**' की सिद्धि सम्पूर्ण पशुपक्षियों में है। "**अ-मोघ-वीर्य**" का अर्थ यह है कि जिसका वीर्य व्यर्थ नहीं जाता, अवश्य ही उससे संतान उत्पन्न होता है। प्रायः सब पशुओं का वीर्य फलीभूत होता ही है। इतनी पशुओं के समान सिद्धि मनुष्य सुगमता से प्राप्त कर सकता है। थोड़ा सा संयम करने से यह सिद्धि प्राप्त होती है। परन्तु मनुष्य में इतनी ही सिद्धि होने से पूर्णता नहीं होती, क्योंकि सब सृष्टि में मनुष्य ही पूर्ण शक्ति से सम्पन्न है। इसलिये मनुष्य को चाहिये कि यह अपनी प्रबल इच्छाशक्ति द्वारा ऐसा दृढ़ संयम करे कि, उससे अपनी इच्छा के अनुरूप ही संतान उत्पन्न होने का निश्चय हो। माता और पिता की मिलकर एक ही इच्छा होने से, और माता-पिता संयमी होने से उक्त बात पूर्णता से सिद्ध हो सकती है। ❁

पाखण्ड-खंडन

रचयिताः महाकवि नाथूराम 'शंकर' शर्मा

इस अण्ड बण्ड पाखण्ड को हम खण्ड-खण्ड कर देंगे॥
आँख अविद्या की फोड़ेंगे,
गोड़ गपोड़ों के तोड़ेंगे।
जिअत न छलबल को छोड़ेंगे,
ढाय ढोंग बर बण्ड को-
मुख में माटी भर देंगे॥ इस अण्ड बण्ड0 ॥ 1॥
जड़ पूजा की जड़ न रहेगी,
पन्थों की अड़गड़ न रहेगी।
ग्रन्थों की गड़बड़ न रहेगी,
मायावाद प्रचण्ड को-
अपनाय न आदर देंगे॥ इस अण्ड बण्ड0 ॥ 2॥
अवतारों की आस न होगी,
भूतों की भय त्रास न होगी।
पिण्डोदक विधि पास न होगी,
पौराणिक यम दण्ड को-
भ्रम के शिर पर धर देंगे॥ इस अण्ड बण्ड0 ॥ 3॥
छूआछात पर छार पड़ेगी,
मन्द मतों पर मार पड़ेगी।
हठ के पीछे हार पड़ेगी,
'शंकर' घोर घमण्ड को-
घुड़की निशि वासर देंगे॥ इस अण्ड बण्ड0 ॥ 4॥

❁❁❁

आप्त वचन

❁ जहाँ चाह है वहाँ राह है। ❁ अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक पापी होता है।
❁ उतावला सो वावला। ❁ चरित्र का बीज बोकर उद्देश्य की फसल काट लो।
❁ उधार से ऐसे डरना चाहिए जैसे मौत से। ❁ ईश्वर भक्ति के बिना पाप से नहीं बच सकते।

आर्य-जीवन

लेखकः पं० राजाराम प्रोफेसर

उठने का समय और पहला कर्तव्य

नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात् पुरोषसः।
यदजः प्रथमं संबभूव स ह तत् स्वराज्य मियाय यस्मान्नन्यत् परमस्ति भूतम्।।

–(अथर्व0 10। 7। 31)

सूर्य से पहले और उषा से पहले नाम नाम से उसे बार-2 पुकारे, जो अजन्मा है, (अतएव इस जगत् से) पहले प्रकट है, वह निःसन्देह जगत् प्रसिद्ध स्वराज्य को पाये हुए है, जिससे बढ़कर कोई सत्ता नहीं है।

यह मन्त्र आज्ञा देता है, कि सूर्य से पीछे कभी न उठो, सूर्य से पहले उठो, और उत्तमता यह है, कि उषा से भी पहले उठो। और उठकर सबसे पहले उसका नाम लो, उसका धन्यवाद गाओ, जिसका इस सारे विश्व पर एकाधिपत्य राज्य है। उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने से जीवन में बल आता है।

उषा के फूटने का दृश्य

उषा के पहले उठे हो, तो अब उषा के दृश्य को वैदिक दृष्टि से देखो। वेद में जो दिव्य दृश्य वर्णन किये हैं, वे निरे दृश्य नहीं किन्तु उनसे परमेश्वर की महिमा और उस दृश्य के द्वारा हमारे ऊपर होने वाले उपकार दिखलाना अभिप्रेत होताहै, सो तुम इसी रूप में वैदिक दृश्यों को देखो–

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ठ विभ्वा।
यथा प्रसूता सवितुः सवाय एवा रात्र्युषसे योनिमारैक्।। –(ऋ0 1। 113। 1)

यह ज्योतियों में श्रेष्ठ ज्योति आई है, यह रंगीला दृश्य (आकाश में) फैलता जा रहा है। जैसे उषा सूर्य की प्रवृत्ति के लिए स्थान छोड़ देती है, वैसे रात्री ने उषा के लिए स्थान छोड़ दिया है।

इससे आर्यजीवन का यह अंग भी दिखला दिया है, कि एक आर्य को अपना निवास वहाँ रखना चाहिये, जहाँ दिव्य दृश्य उसके सम्मुख आते रहें। आजकल के शहरी पर जहां ये दृश्य देखने को नहीं मिलते, आर्यजीवन के विरुद्ध हैं। इन दृश्यों के देखने से प्रसन्नता बढ़ती है, स्वास्थ्य बढ़ता है, प्रसन्न वदन रहने का स्वभाव बनता है, और ईश्वर की महिमा से पूरित इन दृश्यों को देखने से आत्मबल बढ़ता है, और ये सभी बातें लोक में कार्यसिद्धि का मूल हुआ करती हैं

पृथूरथो दक्षिणाया अयोज्यैनं देवासो अमृतासोअस्थुः।
कृष्णादुदस्थादर्या विहाया श्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय।। –(ऋ0 1। 123। 1)

उषा का विशाल रथ जुड़ गया है, इस पर मरण रहित देवता (किरणें) सवार हुए हैं, रानी उषा मनुष्य समुदाय के लिए चिकित्सा करती हुई काले आकाश से उठ खड़ी है॥

इससे बोधन किया है, कि सबेरे उठने वाले नीरोग रहते हैं, और यह, कि तमोमय स्थान रोग का मूल होते हैं, उनकी चिकित्सा यही है, कि वहां खुले प्रकाश के द्वार खोल दो।

गृहं गृहमहना यात्यच्छा दिवे दिवे अधिनामा दधाना।
सिषासन्ती द्योतना शश्वदागादग्र मग्रमित् भजते वसूनाम॥ –(ऋ0 1। 123। 4)

उषा दिन पर दिन सवाया रूप धरती हुई घर–2 की ओर जाती है, यह कुछ देना चाहती हुई चमकती हुई सदा आती है, और अपने कोषों में से आगे–आगे बांटती ही जाती है।

श्लाघनीय जीवन यह है, कि मनुष्य का मस्तक सदा खिला रहे, चेहरा चमकता रहे, दूसरों की भलाई की इच्छा उसमें बनी रहे, अपना ऐश्वर्य बढ़ाता रहे, और बांटता रहे।

सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः।
सह द्युम्नेन बृहतो विभावरि राया देवी दास्वती॥ –(ऋ0 1। 48। 1)

हे उषा हे द्यौ की कन्या हमारे लिए सुहावने मनोरम दृश्य के साथ खिल, हे प्रकाश से भरी हुई बड़े यश तेज और महत्व के साथ खिल, हे देवि दानशीला बनकर ऐश्वर्य के साथ खिल।

तेरा आगमन हमारे लिये यश तेज महत्व और ऐश्वर्य का लाने वाला हो, अर्थात् हम इस नए दिन को यश तेज महत्व और ऐश्वर्य की प्राप्ति से सफल बनावें। ऐसा चिन्तन करने से मनुष्य उद्योगी और धर्मशील बनता है।

उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम्।
येअस्या आचरणेषु दध्रिरे समुद्रे न श्रवस्यवः॥ –(ऋ0 1। 48। 3)

उषा अन्धकार को सदा मिटाती आई है, वह अब फिर खिले, यह वह देवी है, जो उनके रथों को आगे बढ़ाती है, जो इसके आने पर सन्नद्ध हो जाते हैं, जैसे धन और यश की कामना वाले समुद्र में (जहाज ले जाने को तैयार होते हैं)।

श्लाघ्य जीवन वह है, जो सदा अन्धकार के मिटाने में प्रवृत्त रहे। जो लोग उषा का प्रकाश आते ही काम करने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं, उनके रथ इस लोक में आगे बढ़ते हैं, अर्थात् जीवन की इस घुड़दौड़ में वही सबसे आगे रहते हैं और दूसरे उसकी पहुंच को नहीं पहुंच सकते, जो इस अमृत बेले सोए पड़े रहते हैं।

"जैसे धन और यश की कामना वाले समुद्र में" इस उपमा से यह दिखलाया है, कि उषा के समय जागने वालों में उत्साह और साहस बढ़ते हैं, उत्साही और साहसी ही धन और यश की कामना से समुद्रों के पार पहुंचते हैं। इससे समुद्र में से, वा समुद्र के पार से धन लाने और यश के झंडे गाड़ने को एक श्लाघ्य कर्म बतलाया है। अतएव यह निःसन्देह है, कि समुद्रयात्रा का निषेध जीवन की इस महिमा को भूल जाने पर हुआ है।

इस प्रकार पुरुष नेत्रों से परमेश्वर की महिमा देखता हुआ और मन में शुभ संकल्प लाता हुआ नए दिन का स्वागत करे।

आरोग्य, बल और आयु

हर एक आर्य का धर्म है, कि अपने शरीर और इन्द्रियों की रक्षा और पालन पोषण ऐसी सावधानी से करे, कि सदा स्वस्थ रहे, बलवान् और आयुष्मान् हो, और अपने जीवन में इस वैदिक आदर्श को प्रत्यक्ष दिखला सके कि–

वाङ्म आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाव्होर्बलम्।। 1।।
ऊर्वोरोजो जङ्घ्योर्जवः पादयोः प्रतिष्ठा।
अरिष्टानि मे सर्वात्मना निश्रृष्टः।। 2।। –(अथर्व0 19। 60)

मेरे मुख में वाणी है (मुझमें अपने मन के भाव प्रकट करने की शक्ति है, और मुझे अपने भाव प्रकट करने में किसी का भय नहीं है) मेरे नथनों में प्राण है (मैं जीता जागता हूं, अतएव जीवन के लक्षण दिखला सकता हूं) मेरे नेत्रों में दृष्टि है और कानों में श्रुति है (मैं यथार्थ देखता हूं और यथार्थ सुनता हूं) मेरे बाल श्वेत नहीं हैं, मेरे दांत लाल नहीं हैं, (न उनसे रुधिर बहता है न मैले हैं) मेरी भुजाओं में बड़ा बल है॥ 1॥

मेरी रानों में शक्ति है, और मेरी जंघों में बेग है, मेरे दोनों पाओं में दृढ़ खड़ा होने की शक्ति है (मैं इस जीवन संग्राम में अपने पाओं पर खड़ा हूं, और उठकर खड़ा हूं) मेरे सरे अंग पूर्ण और नीरोग हैं, मेरा आत्मा परिपक्क है (बलवान् और तेजस्वी) है।

तनूस्तन्वां मे भवेदन्तः सर्वमायु रशीय।
स्योन मासीद पुरु पृणस्व पवमानः स्वर्गे।। –(अथर्व0 19। 61)

मेरे शरीर के अन्दर फैलाने वाली शक्ति हो, मैं पूर्ण आयु भोगूं। (इसलिए हे मेरे आत्मा) तू स्वर्ग में अपने आप को पवित्र करता हुआ अनुकूल स्थान में बैठ और अपने आपको सर्वांग में पूर्ण बना।

आरोग्य बल और आयु के लिए प्रार्थनाएं (अर्थात् ईश्वर से सहायता मांगना)

तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाह्या युर्दा अग्ने स्यायुर्मे देहि वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि।
अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।। –(यजु0 3। 17)

हे अग्ने! तू शरीर का रक्षक है, मेरे शरीर की रक्षा कर हे अग्ने! तू आयु का देने वाला है, मुझे आयु दे, हे अग्ने तू कान्ति का देने वाला है, मुझे कान्ति दे, हे अग्ने जो मेरे शरीर की ऊनता है, वह मेरी पूर्ण कर दे।

तेजोसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि बलमसि बलं मयि धेहि मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहो सि सहो मयि धेहि। –(यजु0 19। 9)

तू तेज है, मुझमें तेज स्थापन कर। तू शक्ति है, मुझमें शक्ति स्थापन कर। तू बल है, मुझमें बल स्थापन कर। तू ओज (प्रयत्न शक्ति) है, मुझमें ओज स्थापन कर। तू मन्यु है मुझमें मन्यु स्थापित कर। तू सहनशक्ति है, मुझमें सहनशक्ति स्थापन कर।

सो प्रत्येक आर्य का धर्म है, कि शौच स्नान रहन सहन खान पान सब ऐसा रक्खें, जिससे उसका स्वास्थ्य शक्ति और आयु बढ़े। विशेषतः व्यायामशील हो क्योंकि–

लाघवं कर्मसामर्थ्यं विभक्तघनगात्रता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।। 1।।
व्यायाम दृढ़ गात्रस्य व्याधिर्नास्तिकदाचन।
विरुद्धं वा विदग्धं वा भुक्तं शीघ्रं विपच्यते।। 2।।
भवन्ति शीघ्रं नैतस्य देहे शिथिलतादयः।
नचैनं सहसा क्रम्य जरा समधिरोहति।। 3।।

व्यायाम से शरीर हल्का होता है काम करने की शक्ति आती है, अलग-2 सारे अंग पीन (पीडे) हो जाते हैं, (कफ आदि) दोष दूर होते हैं, और जाठारग्नि बढ़ता है। ।1।।

व्यायाम से दृढ़ अंगों वाले को रोग नहीं दबाता, विरुद्ध वा अधकच्चा भोजन भी शीघ्र पच जाता है।। 2।।

इसके शरीर में शिथिलता आदि जल्दी नहीं होते, और न बुढ़ापा उसको दबा कर सवार होता है।। 3।।

व्यायाम से अभिप्राय शारीरिक परिश्रम के हर एक कार्य से है। निरा दण्ड आदि का ही नाम नहीं। व्यायाम सबसे उत्तम वही है, जो घर के काम काज में होता है, इसलिए घर के काम काज में लज्जा कभी नहीं करनी चाहिए।

बुद्धिबल

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्यमे धयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।। –(यजु0 32। 14)

जिस मेधा को देवगण और पितर सेवन करते हैं, उस मेधा से हे अग्ने मुझे मेधावी बना।

चरित्र बल

परिमाग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वामा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँ अनु।। –(यजु0 4। 28)

हे अग्ने मुझे दुश्चरित से सदा बचाते रहो, और सुचरित में सदा चलाते रहो, जिससे कि मैं उच्च जीवन और पवित्र जीवन के साथ देवताओं की ओर उठूं।

❁❁❁

फार्म–4
नियम 8 देखिये

1.	प्रकाशन का स्थान	मथुरा
2.	प्रकाशन की अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम व पता	मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, वृन्दावन रोड, मथुरा
	(क्या भारत का नागरिक)	हाँ
	(विदेशी है तो मूल देश)	नहीं
	पता	आकशवाणी के सामने, वृन्दावन रोड, मथुरा
4.	प्रकाशक का नाम	आचार्य स्वदेश
	(क्या भारत का नागरिक)	हाँ
	(विदेशी है तो मूल देश)	नहीं
	पता	सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा
5.	सम्पादक का नाम	आचार्य स्वदेश
	(क्या भारत का नागरिक)	हाँ
	(विदेशी है तो मूल देश)	नहीं
	पता	सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	आचार्य स्वदेश, वृन्दावन मार्ग, मथुरा

मैं आचार्य स्वदेश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

मथुरा
दिनांक 7 फरवरी 2020

आचार्य स्वदेश
प्रकाशक के हस्ताक्षर

॥ ओ३म्॥

श्री गुरू विरजानन्द आर्ष गुरूकुल वेद मन्दिर, मथुरा

में

ऋषि बोधोत्सव पर

51 कुण्डीय यज्ञ का भव्य आयोजन
दिनांक 21 फरवरी 2020 शुक्रवार

सज्जनो!

प्रायः सांसारिक बन्धनों में जकड़े गृहस्थ जीवन में व्यक्ति मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य से विमुख हो जाता है। अज्ञानतावश अपने ही विपरीत कर्मों से दुःखों के द्वार खोल लेता है। इस बात को ध्यान में रखकर सर्वजन के हितचिन्तक ऋषियों ने सबके कल्याण की भावना से अनेक प्रकार के यत्न किये हैं। उन प्रयत्नों में ही धार्मिक आयोजनों की योजना रखी। इन धार्मिक आयोजनों के बहाने से व्यक्ति समय निकालकर यज्ञादि शुभ कर्म में प्रेरित हो जाता है। विद्वानों के उपदेश सुनकर अपना कल्याण करने में समर्थ हो जाता है। इसी भावना से प्रेरित होकर आपके अपने ही श्री गुरू विरजानन्द आर्ष गुरूकुल, वेदमन्दिर, मथुरा में प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि पर्व ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाया जाता है। 51 कुण्डीय यज्ञ भी सर्वकल्याण की कामना से रखा जाता है। आप भी इस पावन अवसर पर सपरिवार यजमान के रूप में पधारें ऐसी हमारी कामना है। अति सुन्दर हो यदि आप भारतीय वेश-भूषा में आयें। यजमान बनने के इच्छुकजन अपने साथ घी, कटोरी, कपूर, दियासलाई, चम्मच, लोटा अवश्य लायें, जिससे यज्ञ करने में सुविधा हो। यदि ना ला सकें तो यह व्यवस्था यहाँ पर भी रहेगी। 21 फरवरी 2020 शुक्रवार को प्रातः 8 बजे आप यज्ञस्थल पर अवश्य आ जायें। यज्ञ के बाद भण्डारे की व्यवस्था है प्रसाद भी यहीं ग्रहण करें। पुनः नगर कीर्तन 2 बजे से शोभायात्रा के रूप में होगा। अतः इस पावन सुअवसर को हाथ से न जाने दें।

कर यज्ञ यथावत दान करे, फल सौगुन होय ऋषि बतलाते।
दुःख दूर करे दुखिया जन के, उसके करता सुख-साधन पाते।
सद्पात्र विचार करे धन दान, मिलें फल जो न कभी मिट पाते।
सब प्राणिन को भय हीन करे, उसके फल की गणना न बताते।।

उत्सव की सफलता का दायित्व आप सभी याज्ञिक जनों पर है। अतः सभी सांसारिक कार्यों को विराम देकर आयोजन को सफल बनाकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक

अध्यक्ष	मंत्री	अधिष्ठाता
(डॉ0 सत्यप्रकाश अग्रवाल)	(वृजभूषण अग्रवाल)	(आचार्य स्वदेश)

सम्पर्क सूत्र- 9456811519, (0565) 2406431

विशेषः गुरूकुल मसानी चौराहा से (कच्चीसड़क) आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग पर स्थित है। दूर से आने वाले आगन्तुक 20 फरवरी 2020 सायं तक उपस्थित होने का कष्ट करें।

दिव्य स्वप्न साकार हो सकें।

विशेष निवेदन यह है कि इस अवसर पर एक स्मारिका के प्रकाशन का निश्चय किया गया है जिसमें आचार्य जी की लेखनी से प्रसूत उनकी कुछ अप्रकाशित कवितायें, उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग समाहित होंगे। आचार्य जी की जो कार्यशैली थी उससे यह निश्चय है कि जो कभी भी आचार्य जी के सम्पर्क में आये होंगे उनके पास अथवा उनके परिवार में उनके लिखे पत्र, कुछ छायाचित्र अथवा और कुछ नहीं तो प्रेरक स्मृतियाँ अवश्य होंगी। हमारी उत्कट अभिलाषा है कि यह सामग्री इस स्मारिका का भाग बन, स्मारिका को उच्च आयाम प्रदान करे। आपका थोड़ा सा पुरुषार्थ यह सब कर सकता है, अतः निवेदन है कि ऐसी कोई भी सामग्री अतिशीघ्र हम तक निम्न पते पर पहुंचाने का श्रम कर इस पुण्य-कार्य में भागीदार बनें।

1- श्री अशोक आर्य (आचार्य जी के कनिष्ठ पुत्र)
कार्यकारी अध्यक्ष-श्री मद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, उदयपुर (राज.) 313001 मोबा. 9314235101
ईमेल-aarya1353@gmail. com

2- आचार्य स्वदेश जी (अधिष्ठाता)
वेदमन्दिर, श्री विरजानन्द ट्रस्ट
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग, मसानी, मथुरा (उ. प्र.) 281003
मोबा. 9456811519

कृपया अपने सद्भावना सन्देश भेजकर भी उपकृत करें।

निवेदक

श्री विरजानन्द ट्रस्ट, मथुरा (उ. प्र.)

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण (सजिल्द)	220.00	भ्रांति दर्शन	20.00	गायत्री गौरव	5.00
शुद्ध रामायण (अजिल्द)	170.00	शान्ता	20.00	महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
शंकर सर्वस्व	120.00	संध्या रहस्य	20.00	सफल व्यक्तित्व	5.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00	गीता तत्व दर्शन	20.00	जीजा साले की बातें	5.00
शुद्ध कृष्णायण	80.00	गृहस्थ जीवन रहस्य	20.00	विषपान और अमृत दान	5.00
शुद्ध हनुमच्चरित	60.00	श्रीमद् भगवत गीता	20.00	पंचाग के गुलाम	5.00
नित्य कर्म विधि	45.00	आर्यों की दिनचर्या	20.00	सर्वश्रेष्ठ कहानियां (प्रेस में)	
विदुर नीति	40.00	दयानन्द और विवेकानन्द	15.00	नमस्ते ही क्यों	10.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00	इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ	12.00	महिला गीतांजलि	15.00
चाणक्य नीति	40.00	बाल मनुस्मृति	12.00	पुराणों के कृष्ण	12.00
महाभारत के प्रेरक प्रसंग	40.00	ओंकार उपासना	12.00	भागवत के नमकीन चुटकुले	8.00
दो मित्रों की बातें	35.00	शुद्ध सत्यनारायण कथा	15.00	आदर्श पत्नी	10.00
वेद प्रभा	30.00	दादी पोती की बातें	10.00	मानव तू मानव बन	8.00
शान्ति कथा	30.00	दण्डी जी का जीवन पथ	10.00	ऋषि गाथा	4.00
भारत और मूर्ति पूजा	30.00	क्या भूत होते हैं (प्रेस में)		सर्प विष उपचार	4.00
यज्ञमय जीवन	30.00	महाभारत के कृष्ण	15.00	चूहे की कहानी	4.00
दो बहिनों की बातें	30.00	ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00	उपासना के लाभ	4.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00	सच्चे गुच्छे	8.00	भगवान के एजेन्ट (प्रेस में)	
चार मित्रों की बातें	20.00	मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00	दयानन्द की दया	3.00
भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	20.00	वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00	शंकराचार्य और मूर्ति पूजा	3.00
				शांति पथ	2.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2020 के लिये वार्षिक शुल्क 150/- रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/- भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक-पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :-
व्यवस्थापक - कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर- गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबा. 9759804182

Yogendra # 9927135600

मुद्रक : स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, वृन्दावन रोड, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित